Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 17

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

19 शअबान 1440 हिजरी कमरी 25 शहादत 1397 हिजरी शमसी 25 अप्रैल 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

तक़्वा वालों के लिए यह शर्त थी कि वह ग़ुर्बत और मिस्कीनी में अपनी ज़िन्दगी बसर करे। यह एक तक़्वा की शाख़ है जिसके द्वारा हमें नाजायज़ ग़ज़ब का मुक़ाबला करना है। बड़े बड़े आरिफ़ और सिद्दीक़ों के लिए आख़िरी और कड़ी मंज़िल ग़ज़ब से ही बचना है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे पर अहंकार करें या हीन दृष्टि से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लामी पर्दा

आजकल पर्दा पर हमले किए जाते हैं लेकिन ये लोग जानते नहीं कि इस्लामी पर्दा से अभिप्राय क़ैद नहीं बल्कि एक किस्म की रोक है कि ग़ैर मर्द और औरत एक दूसरे को ना देख सके। जब पर्दा होगा ,ठोकर से बचेंगे। एक मुंसिफ़ मिज़ाज कह सकता है कि ऐसे लोगों में जहां ग़ैर मर्द औरत इकट्ठे बिना झिझक के और बिना रोक के मिल सकें ,सैरें करें,क्योंकर जज़बात नफ़्स से विविश हो ठोकर ना खाएँगे। कई बार सुनने देखने में आया है कि ऐसी कौमें ग़ैर मर्द , औरत को एक मकान में अकेले रहने को हालाँकि दरवाज़ा भी बंद हो , कोई बुराई नहीं समझतीं। यह मानो तहज़ीब है। इन ही बुरे नतीजों को रोकने के लिए इस्लाम की शरीयत ने वे बातें करने ही की इजाज़त ना दी जो किसी की ठोकर का कारण हों। ऐसे मौक़ा में यह कह दिया कि जहां इस तरह दो ग़ैर मुहर्रम मर्द तथा औरत जमा हूँ तीसरा उनमें शैतान होता है। इन नापाक नतीजों पर ग़ौर करो जो यूरोप इस ख़ली उर्रसन(गली सड़ी) शिक्षा से भुगत रहा है। कई जगह बिलकुल शर्म योग्य तवायफों की ज़िन्दगी बसर की जा रही है। यह उन्हीं शिक्षाओं का नतीजा है। अगर किसी चीज़ को ख़ियानत से बचाना चाहते हो तो हिफ़ाज़त करो। लेकिन अगर हिफ़ाज़त ना करो और यह समझ रखो कि अच्छे लोग हैं ,तो याद रखो कि ज़रूर वह चीज़ तबाह होगी। इस्लामी शिक्षा क्या पाक शिक्षा है कि जिसने मर्द तथा औरत को अलग रखकर ठोकर से बचाया और इन्सान की ज़िन्दगी हराम और कठिन नहीं की जिससे यूरोप ने आए दिन की आपसी लड़ाइयां और ख़ुदकुशियाँ देखीं। कई शरीफ़ औरतों का वेश्याओं जैसा ज़िंदगी बसर करना एक व्यवहारिक नतीजा इस इजाज़त का है जो ग़ैर औरत को देखने के लिए दी गई।

इन्सानी शक्तियों का उचित और जायज़ प्रयोग

अल्लाह तआला ने जितनी शक्तियां प्रदान फ़रमाईं वे नष्ट करने के लिए नहीं दी गईं उनकी उचित और जायज़ प्रयोग करना ही उनकी बढ़ोतरी है। इसी लिए इस्लाम ने पुरुषत्व या आँख के निकालने की शिक्षा नहीं दी बल्कि उनका जायज़ इस्तिमाल और नफ़्स की पवित्रता कराई। जैसे फ़रमाया : قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ(अलमोमेनून:2) और ऐसे यहां भी कहा। मुत्तक़ी की ज़िंदगी का नक़्शा खींच कर आख़िर में बतौर नतीजा यह फरमाया وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (अलबक़र :6)अर्थात वे लोग जो तक़्वा पर क़दम मारते हैं। ईमान बिलग़ैब (परोक्ष) लाते हैं। नमाज़ डगमगाती है। फिर उसे खड़ा करते हैं। ख़ुदा के दिए से देते हैं। बावजूद नफ़्स के खत्रों के बिना सोचे ,पिछले और मौजूदा किताब-उल्लाह पर ईमान लाते हैं और आख़िर में वे यक़ीन तक पहुंच जाते हैं। यही वे लोग हैं जो हिदायत के सर पर हैं। वे एक ऐसी सड़क पर हैं जो बराबर आगे को जा रही है और जिससे आदमी फ़लाह तक पहुंचता है। अत: यही लोग सफल हैं जो मंज़िल मक़्सूद तक पहुंच जाएंगे और राह के ख़तरों से नजात पा चुके हैं ,इसलिए शुरू में ही अल्लाह तआला ने हम को तक़्वा की शिक्षा करके एक ऐसी किताब हमको प्रदान की जिसमें तक़्वा के वसीयतें भी दीं।

अत: हमारी जमाअत यह ग़म सारे दुनयावी ग़मों से बढ़कर अपनी जान पर लगाऐं कि उनमें तक़्वा है या नहीं।

अपनी ज़िन्दगी ग़ुर्बत और मिस्कीनी में व्यतीत करो।

तक़्वा वालों के लिए यह शर्त थी कि वह ग़ुर्बत और मिस्कीनी में अपनी ज़िन्दगी बसर करे। यह एक तक़्वा की शाख़ है जिसके द्वारा हमें नाजायज़ ग़ज़ब का मुक़ाबला करना है। बड़े बड़े आरिफ़ और सिद्दीक़ों के लिए आख़िरी और कड़ी मंज़िल ग़ज़ब से ही बचना है। अंहकार तथा गर्व ग़ज़ब से पैदा होता है और ऐसा ही कभी ख़ुद ग़ज़ब अहंकार तथा गर्व का नतीजा होता है ,क्योंकि ग़ज़ब उस वक़्त होगा जब इन्सान अपने नफ़्स को दूसरे पर प्राथिमकता देता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे पर अहंकार करें या हीन दृष्टि से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। यह एक किस्म का अपमान है और जिसके अंदर हीनता है ,डर है कि यह हीनता बीज की तरह बढ़े और इस की हलाकत का कारण हो जाए। कई आदमी बड़ों को मिलकर बड़े अदब से पेश आते हैं। लेकिन बड़ा वह है जो मिस्कीन की बात को मिस्कीनी से सुने, उस की दिलजोई करे, उस की बात की इज़्ज़त करे , कोई चिढ़ की बात मुँह पर ना लाए कि जिससे दुख पहुंचे। ख़ुदा तआला फरमाता है وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ(-सूरह अल्हुजरात 12)तुम एक दूसरे के चिढ़ के नाम ना डालो। यह कर्म फुस्साक़ तथा फुज्जार का है। जो आदमी किसी को चिढ़ाता है ,वे ना मरेगा जब तक वे ख़ुद इसी तरह पीड़ित ना होगा। अपने भाईयों को तुच्छ ना समझो। जब एक ही स्रोत से सारे पानी पीते हो ,तो कौन जानता है कि किस की क़िस्मत में ज़्यादा पानी पीना है। सम्मान्नीय तथा इज़्ज़त वाला कोई दुनियावी उसूलों से नहीं हो सकता। ख़ुदा ताला के नज़दीक बड़ा वह है जो मुत्तक़ी है। اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ(सूरह अल्हुजरात :14)

ज़ातों का इमतियाज़

ये जो विभिन्न ज़ातें हैं ये कोई शराफ़त का कारण नहीं। ख़ुदा तआला ने केवल पहचानने के लिए ये ज़ातें बनाईं और आजकल तो केवल चार नस्लों के बाद हक़ीक़ी पता लगाना ही मुश्किल है। मुत्तक़ी की शान नहीं कि ज़ातों के झगड़े में पड़े,जब अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर दिया कि मेरे नज़दीक ज़ात कोई सनद नहीं। हक़ीक़ी सम्मान और अज़मत का कारण केवल तक़्वा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1, पृष्ठ 29 से 31, प्रकाशन 2018 ई कादियान)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-7)

लतोवा, इस्टोनिया, सलोयेनिन, कज़ाकिस्तान, कोसोवो के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात।

* जलसा सालाना जर्मनी 2018 ई में शामिल होने वाले मेहमानों की ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

जलसा सालाना में शामिल होने वाले कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

एक छात्र Jokubas Cepartis कहते हैं जलसा सालाना में शिरकत करके मुझे लग रहा है कि मैं इस जमाअत का हिस्सा हूँ। अब मुझे ज़िन्दगी का मक़सद समझ आया है। मुझे हुज़ूर से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है। मैं हुज़ूर की शख़्सियत से बहुत प्रभावित हुआ हूँ । हुज़ूर निहायत ही शफ़ीक़ और मुहब्बत करने वाले हैं। उनसे बात करके मुझे महसूस हुआ है कि दिल की गहिराइयों से वह मुझ से मुहब्बत करते हैं। इस्लाम की हक़ीक़त को मैंने पा लिया है और आज बैअत करके जमाअत अहमिदया में दाख़िल होता हूँ। मैं अक्सर समय शंकाओं में पीड़ित रहता था लेकिन अब अपने ईमान में मज़बूती पैदा करके बाक़ी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करूँगा।

लतोवा से एक मैडीकल के स्टूडैंट बिंजामन करीम साहिब अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं कि जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। मुझे ऐसे महसूस हुआ कि यह जलसा इन सारे लोगों का इज्तिमा है जो कि मज़बूत ईमान और सन्तुष्ट रूहों के मालिक और भाईचारे वाले अमन वाले लोग हैं। मेरे लिए यह बात हैरत का कारण थी कि किस तरह हर कोई ध्यान के साथ तक़ारीर सुनने और अपने काम में मग्न था। हुज़ूर अनवर को देखना और सुनना भी मेरे लिए सम्मान था कि किस तरह उन्होंने जर्मनी में मुहाजिरीन के मामले और इस्लाम के बारे में लोगों के दिलों में पाए जाने वाले ख़ौफ़ के बारे में भी बात की। यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि जमाअत अहमिदया दुनिया में अमन का प्रचार कर रही है और जर्मन समाज में दोस्ताना पड़ोसी और ख़िदमत पर ज़ोर दे रही है। मुझे यह भी हैरत हुई कि किस तरह लोग मेरी तरफ़ आ रहे थे और जानना चाहते थे कि मेरी भावनाए तथा एहसास क्या हैं। फ़लाही इदारे , बुक स्टोर, टीवी सैटेलाइट , खाना पीना और वहां के बाज़ार , हर चीज़ ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह पाकिस्तानी सभ्यता को जर्मनी में लाने की एक अच्छी कोशिश थी। सामूहिक तौर पर मुझे इस्लाम अहमदियत और पाकिस्तानी सभ्यता को जानने में काफ़ी मदद मिली।

लतोवा में एक ग़ैर अहमदी पाकिस्तानी मुहम्मद जुनैद सलीमी साहिब मास्टर्ज़ की शिक्षा हासिल कर रहे हैं। यह भी जलसा पर शामिल हुए और अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा मैं पिछले महीने ही स्टडी वीज़ा पर पाकिस्तान से लतोया आया हूँ। मुझे भी जलसा में शामिल होने की दावत दी गई जो कि शंका के बाद मैंने क़बूल कर ली। जब मैं जलसा गाह पहुंचा तो वहां इंतिज़ामीया को देखकर में बहुत हैरान हुआ क्योंकि वहां बहुत ज़्यादा लोग थे। इंतिज़ामीया बड़ी ख़ूबसूरती और समझदारी से सबको सँभाल रही थी जलसा गाह में बहुत सारे लोग थे जिनमें काफ़ी सारे विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाले ग़ैर मुस्लिम मेहमान थे और उन सबको इस लिए दावत दी गई थी ताकि वह इस्लाम धर्म को आकर ख़ुद देखें। मैंने इतना प्यार , मुहब्बत , इज़्ज़त , सम्मान और मेहमान-नवाज़ी कभी अपनी पूरी ज़िन्दगी में कहीं नहीं देखी जितनी मैंने वहां देखी और मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि इस से सारी ग़ैर मुस्लिमों पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा और वह इस्लाम धर्म की तरफ़ आने की ज़रूर कोशिश करेंगे। मैं चूँकि अहमदी नहीं हूँ इसलिए मेरे दिल में भी कुछ ग़लत-फ़हमियाँ थीं जो हर दूसरे फ़िर्क़े वाले मुसलमानों के दिल में होती हैं। वहां जब मैंने तक़ारीर सुनीं और वहां पर लिखे हुए वाक्य देखे और नमाज़ भी पढ़ी तो मुझे कोई फ़र्क़ नहीं लगा। यही सब कुछ हम भी करते हैं और यही सब कुछ अहमदी भी कर रहे हैं। उनका कलिमा भी वही है , नमाज़ भी वही और क़ुरआन भी वही। सबसे ज़्यादा काबिल ग़ौर बात ख़त्मे नबुव्वत थी जिस पर मैं अब सोचने पर मजबूर हो गया हूँ कि ग़ौर तथा फिक्र करूँ कि क्या मैं अपने फ़िर्क़े को सच्चा कहूं या अहमदी फ़िर्क़े को। सब से बड़ा लाभ मुझे जलसा पर आने का यही हुआ है कि मैंने अहमदी लोगों में बैठ कर सब कुछ ख़ुद अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है और अब में अपने तौर पर अच्छी तरह देखूँगा कि इस्लाम असल में किया है और ख़त्म नबुव्वत क्या है? मुझे हुज़ूर की तक़रीर बहुत पसंद आई , विशेषकर आख़िरी दिन वाली। जलसा ख़त्म होने के अगले दिन मैंने उन से मुलाक़ात भी की। और मुझे उनसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। वह बहुत ही ख़ूबसूरत शख़्सियत के मालिक हैं। ये चार दिन मेरी ज़िन्दगी के बहुत ही अच्छे दिन थे। बाक़ी सारे मुसलमान सिर्फ बातें करते हैं और नफ़रतें फैलाते हैं लेकिन यहां मैंने सिर्फ मुहब्बत इज़्ज़त और सम्मान देखा है। मेरे साथ कुछ ग़ैर मुस्लिम दोस्त भी थे वे मुसलमानों के इस व्यवहार से , इस इज़्ज़त तथा सम्मान सै जो अहमिदया जमाअत ने उनको दिया बहुत ज़्यादा प्रभावित थे। प्रबन्धकीय टीम चाहे वे कोई भी थी, हर किसी ने बहुत प्यार, मुहब्बत , इज़्ज़त तथा सम्मान से बात की और गाइड किया और इतने बड़े जलसा को इतनी ख़ूबसूरती से मैनिज किया। मेहमानों के निवास से लेकर खाने पीने और ट्रांसपोर्ट के प्रबन्ध और इस के इलावा भी हर ज़रूरी प्रबन्ध देखकर में जमाअत अहमिदया से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करता हूँ।

लतोवा से एक मैडीकल के स्टूडैंट बिंजामन करीम साहिब अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं कि जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। मुझे ऐसे महसूस हुआ कि यह जलसा इन सारे लोगों का इज्तिमा है जो कि मज़बूत ईमान और सन्तुष्ट रूहों के मालिक और भाईचारे वाले अमन वाले लोग हैं। मेरे लिए यह बात हैरत का कारण थी कि किस तरह हर कोई ध्यान के साथ तक़ारीर सुनने और अपने काम में मग्न था। हुज़ूर अनवर को देखना और सुनना भी मेरे लिए सम्मान था कि किस तरह उन्होंने जर्मनी में मुहाजिरीन के मामले और इस्लाम के बारे में लोगों के दिलों में पाए जाने वाले ख़ौफ़ के बारे में भी बात की। यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि जमाअत अहमिदया दुनिया में अमन का प्रचार कर रही है और जर्मन समाज में दोस्ताना पड़ोसी और ख़िदमत पर ज़ोर दे रही है। मुझे यह भी हैरत हुई कि किस तरह लोग मेरी तरफ़ आ रहे थे और जानना चाहते थे कि मेरी भावनाए तथा एहसास क्या हैं। फ़लाही इदारे , बुक स्टोर, टीवी सैटेलाइट , खाना पीना और वहां के बाज़ार , हर चीज़ ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह पाकिस्तानी सभ्यता को जर्मनी में लाने की एक अच्छी कोशिश थी। सामूहिक तौर पर मुझे इस्लाम अहमदियत और पाकिस्तानी सभ्यता को जानने में काफ़ी मदद मिली।

लतोवा में एक ग़ैर अहमदी पाकिस्तानी मुहम्मद जुनैद सलीमी साहिब मास्टर्ज़ की शिक्षा हासिल कर रहे हैं। यह भी जलसा पर शामिल हुए और अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा मैं पिछले महीने ही स्टडी वीज़ा पर पाकिस्तान से लतोया आया हूँ। मुझे भी जलसा में शामिल होने की दावत दी गई जो कि शंका के बाद मैंने क़बूल कर ली। जब मैं जलसा गाह पहुंचा तो वहां इंतिज़ामीया को देखकर में बहुत हैरान हुआ क्योंकि वहां बहुत ज़्यादा लोग थे। इंतिज़ामीया बड़ी ख़ूबसूरती और समझदारी से सबको सँभाल रही थी जलसा गाह में बहुत सारे लोग थे जिनमें काफ़ी सारे विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाले ग़ैर मुस्लिम मेहमान थे और उन सबको इस लिए दावत दी गई थी ताकि वह इस्लाम धर्म को आकर ख़ुद देखें। मैंने इतना प्यार , मुहब्बत , इज़्ज़त , सम्मान और मेहमान-नवाज़ी कभी अपनी पूरी ज़िंदगी में कहीं नहीं देखी जितनी मैंने वहां देखी और मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि इस से सारी ग़ैर मुस्लिमों पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा और वह इस्लाम धर्म की तरफ़ आने की ज़रूर कोशिश करेंगे। मैं चूँकि अहमदी नहीं हूँ इसलिए मेरे दिल में भी कुछ ग़लत-फ़हमियाँ थीं जो हर दूसरे फ़िर्क़े वाले मुसलमानों के दिल में होती हैं। वहां जब मैंने तक़ारीर सुनीं और वहां पर लिखे हुए वाक्य देखे और नमाज़ भी पढ़ी तो मुझे कोई फ़र्क़ नहीं लगा। यही सब कुछ हम भी करते हैं और यही सब कुछ अहमदी भी

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

वक़्त था वक़्त-ए-मसीहा ना किसी और का वक़्त
मैं ना आता तो कोई और ही आया होता

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि अगर मेरा कोई दावा क़ुरआन के अनुसार ना हो तो मैं उसे रद्दी की टोकरी में फेंक दूं।

अच्छा तो फिर जिधर क़ुरआन है उधर ही में भी हूँ

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो के शब्दों में ज़माने की हालत , मसीह मौऊद के ज़हूर की ज़रूरत, आप के ज़हूर के ज़माना की विशेषताएं, आप की बिअसत की जगह, आप की मामूरियत की गवाहियां इसी तरह सच्चाई मालूम करने के बारे में मार्गदर्शन के लिए हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के वर्णन किए गए तरीक़ा का ईमान वर्धक बयान।

ख़िलाफ़त के वफ़ादार, नेक और वफ़ा शिआर बुज़ुर्गान मौलाना ख़ुरशीद अहमद अनवर साहिब (वकीलुल माल तहरीक जदीद अंजुमन अहमदिया कादियान), आदरणीय ताहिर हुसैन मुंशी साहिब (नायब अमीर जमाअत अहमदिया फिजी) और माली के मुख़लिस बाशिंदे आदरणीय मूसा सिसको साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 मार्च 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

कल 23 मार्च है और यह दिन जमाअत में यौम मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के हवाले से याद रखा जाता है। इस तारीख़ को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार जिस मसीह तथा महदी ने आख़िरी ज़माना में आकर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को दुनिया को बताना था और फैलाना था और मुसलमानों को एक हाथ पर जमा करना था बल्कि समस्त धर्मों के मानने वालों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में लाना था उस का ऐलान हुआ। अर्थात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने यह ऐलान किया कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी ख़बर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी और इस तरह आप ने अपनी बैअत का आरम्भ फ़रमाया। इस वक़्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ही कुछ प्रस्तुत करूँगा जिन में आपने मसीह मौऊद के आने की ज़रूरत, ज़माना की हालत और अपने दावा के बारे में और जो विभिन्न निशाना इस से जुड़े थे उनके बारे में बताया है। आप अपने एक शेअर में फ़रमाते हैं कि

वक़्त था वक़्त-ए-मसीहा ना किसी और का वक़्त
मैं ना आता तो कोई और ही आया होता

(दुर्रे समीन पृष्ठ 160)

अत: ज़माना की हालत मांग कर रही थी थी कि कोई आए जो इस्लाम की डोलती नांव को सँभाले लेकिन बद-क़िस्मती से मुसलमान उल्मा की अक्सरीयत ने जो पहले इस इंतज़ार में थे कि कोई मसीह आए और बड़ी शिद्दत से यह इंतज़ार कर रहे थे लेकिन आप के दावे के बाद अधिकतर ने विरोध किया और साधारण मुस्लमानों को झूठी कहानियां सुना कर, झूठी बातें आप की तरफ़ वर्णन कर के आप के ख़िलाफ़ और आप की जमाअत के ख़िलाफ़ इस क़दर भड़काया कि क़त्ल के फ़तवे दिए जाने लगे। बल्कि आज तक अहमदियों पर कुछ मुल्कों और जगहों पर ज़ुल्म तथा अत्याचार दिखाते हुए क़त्ल की ऐसी भयानक मिसालें क़ायम की जा रही हैं या की गईं और ये सब कुछ इस्लाम के नाम पर किया गया जिनका इस्लाम की हक़ीक़त जानने वाले कभी सोच भी नहीं सकते और कभी उनसे ऐसी हरकतें अमल में आ ही नहीं सकतीं। बहरहाल हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने हालात और मसीह मौऊद के आ जाने के बारे में किस तरह विभिन्न उपदेश फ़रमाए हैं।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क्यों मसीह मौऊद के आने की ज़रूरत है और मसीह को इस ज़माना से क्या विशेषता है? आप ने यह नहीं फ़रमाया कि बहरहाल मैंने ही आना था। ज़माना मांग कर रहा था कि कोई आए। आप फ़रमाते हैं कि

"क़ुरआन शरीफ़ ने इस्राईली और इस्माईली दो सिलसिलों में ख़िलाफ़त की समानता का खुला खुला इशारा किया है जैसे इस आयत से है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(सूरत अन्नूर 56)आप फ़रमाते हैं कि इस्राईली सिलसिला का आख़री ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी पर हज़रत मूसा अलैहिस्सालम के बाद आया वह मसीह नासरी अलैहिस्सलाम था। मुक़ाबला में ज़रूर था कि इस उम्मत का मसीह भी चौदहवीं सदी के सर पर आए। अहले कशफ़ वाले के अतिरिक्त (जिन को अल्लाह तआला से ख़ास ताल्लुक़ था, कशफ़ वाले थे उन्होंने, बहुत सारे पुराने बुज़ुर्गों ने) इसी सदी को मसीह के प्रादुर्भव का ज़माना क़रार दिया (है)। फ़रमाते हैं कि जैसे हज़रत शाह वली उल्लाह साहिब इत्यादि अहले हदीस का इत्तिफ़ाक़ हो चुका है कि अलामात सुग़रा कुल और अलामात कुबरा एक हद तक पूरी हो चुकी हैं। (अर्थात बड़ी और छोटी निशानियां जो मसीह के आने की थीं वे पूरी हो चुकी हैं।) आप फ़रमाते हैं कि लेकिन इस में किसी क़दर उनकी ग़लती है। (निशानियां जो भी थीं) अलामात कुल पूरी हो चुकी हैं। (ये नहीं कि कुछ हद तक बल्कि मसीह के आने की जो निशानियां थीं वे पूरी हो चुकी हैं। फ़रमाते हैं कि) बड़ी निशानियां या निशान जो आने वाले का है वह बुख़ारी शरीफ़ में يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْر लिखा है अर्थात नुज़ूल मसीह का समय इसाइयों के प्रभुत्व और सलीब की उपासना का ज़ोर है। अत: क्या यह वह वक़्त नहीं? क्या जो कुछ पादरीयों से नुक़्सान इस्लाम को पहुंच चुका है इस का उदाहरण आदम से लेकर आज तक कहीं है? हर मुल्क में मतभेद पड़ गया। कोई ऐसा ख़ानदान इस्लाम का नहीं कि जिसमें से एक-आध आदमी उनके हाथ में ना चला गया हो। अत: आने वाले का वक़्त सलीब परस्ती का ग़लबा है। अब इस से ज़्यादा क्या ग़लबा होगा कि किस तरह दरिन्दों की तरह इस्लाम पर द्वेष से हमले किए गए। (यह शब्द ही उस की वज़ाहत कर देते हैं जो इल्ज़ाम लगाया जाता है कि आप अंग्रेज़ों का ख़ुद लगाया हुआ पौधा हैं। अत: उनसे यह साबित हो जाता है कि क्या आप अंग्रेज़ों का ख़ुद लगाया हुआ पौधा हैं या इस्लाम के प्रतिरक्षा के लिए और इस की विजय साबित करने के लिए मैदान में अल्लाह तआला की तरफ़ से उतारे गए हैं। बहरहाल) आप फ़रमाते हैं कि क्या कोई गिरोह मुख़ालफ़ीन का है कि जिसने हज़रत रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को निहायत वहशियाना शब्दों और गालियों से याद नहीं किया? अब अगर आने वाले का यह वक़्त नहीं तो बहुत जल्दी वह आया भी तो सौ साल तक आएगा क्योंकि वह (मसीह मौऊद) वक़्त का मुजद्दिद है जिसकी बिअसत का ज़माना सदी का सिर होता है। तो क्या इस्लाम में मौजूदा वक़्त में इस क़दर और ताक़त है कि एक सदी तक पादरियों के दिन प्रतिदिन ग़लबा का मुक़ाबला कर सके। ग़लबा हद तक पहुंच गया और आने वाला आ गया। हाँ अब वह दज्जाल को इत्माम हुज्जत से हलाक करेगा क्योंकि हदीसों में

आ चुका है कि उस के हाथ पर मिल्लतों की हलाकत मुक़द्दर है ना लोगों की या अहल मिलल की तो वैसा ही पूरा हुआ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 47-48)

अर्थात मसीह मुहम्मदी ने जो आना था तो उसने दलीलों और तर्कों से सारे दूसरे धर्मों पर इस्लामी शिक्षाओं की बरतरी साबित करनी थी और इस्लामी शिक्षा को हर मज़हब पर अपनी बरतरी मनवाने के लिए प्रस्तुत करना था। हज़ारों ग़ैर मुस्लिम जो हर साल जमाअत अहमदिया में शामिल होते हैं वे आप के दिए हुए दलीलों और तर्कों की वजह से ही होते हैं।

फिर ज़माना की हालत और मसीह मौऊद की ज़रूरत के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं कि

"अगर ज़मीन क़ाबिल नहीं होती तो बारिश का कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुंचता बल्कि उल्टा हानि और नुक़्सान होता है। (अगर कोई ज़मीन अच्छी ना हो, बंजर ज़मीन हो, सख़्त ज़मीन हो तो नुक़्सान ही होता है।) इसी लिए आसमानी नूर उतरा है और वह दिलों को रोशन करना चाहता है। इस के क़बूल करने और इस से फ़ायदा उठाने को तैयार हो जाओ (अर्थात अपनी ज़मीनों को, दिलों की ज़मीन को इसयोग्य बनाओ) ताकि ऐसा ना हो कि बारिश की तरह कि जो ज़मीन योग्यता के जोहर नहीं रखती वह इस को नष्ट कर देती है। (पानी का इस पर कोई फ़ायदा नहीं होता।) तुम भी बावजूद नूर की मौजूदगी के अन्धेरे में चलो और ठोकर खा कर अंधे कुएं में गिर कर हलाक हो जाओ। (यह ना हो कि कहीं तुम्हारा यही हाल हो जाए कि अन्धे को बावजूद रोशनी मिलने के अंधे कुँवें में गिर कर हलाक हो जाओ।) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला मेहरबान माता से भी बढ़कर मेहरबान है। वह नहीं चाहता कि इस की मख़लूक़ नष्ट हो। वह हिदायत और रोशनी की राहें तुम पर खोलता है मगर तुम उन पर क़दम मारने के लिए अक़्ल और नफ़सों की पवित्रता से काम लो। जैसे ज़मीन कि जब तक हल चला कर तैयार नहीं की जाती बीज इस में नहीं बोया जाता। इसी तरह जब तक मुजाहिदा और रियाज़त से नफ़सों को पवित्र नहीं किया जाता पवित्र अक़्ल आसमान से उतर नहीं सकती। इस ज़माना में ख़ुदा तआला ने बड़ा फ़ज़ल किया और अपने धर्म और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समर्थन में ग़ैरत खाकर एक इन्सान को जो तुम में बोल रहा है भेजा ताकि वह इस रोशनी की तरफ़ लोगों को बुलाए। अगर ज़माना में ऐसा फ़साद और फ़ित्ना ना होता और धर्म के समाप्त करने के लिए जिस किस्म की कोशिशें हो रही हैं ना होतीं तो कुछ हर्ज ना था। (कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था।) लेकिन अब तुम देखते हो कि हर तरफ़ यमीन तथा यसार इस्लाम ही को समाप्त करने की फ़िक्र में (हैं। दाएं बाएं से हमले हो रहे हैं।) समस्त क़ौमें लगी हुई हैं। (सारी कौमें इसी कोशिश में हैं, इसी फ़िक्र में हैं। आज तक किसी ना किसी तरीक़े से यही हाल है।) फ़रमाते हैं कि मुझे याद है और बराहीन अहमदिया में भी मैंने ज़िक्र किया है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ छः करोड़ किताबें लिख कर प्रकाशित की गई हैं। (आप के ज़माना की बात है आज से सवा सौ साल पहले बल्कि डेढ़ सौ साल पहले।) फ़रमाते हैं कि अजीब बात है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की संख्या भी छः करोड़ और इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबों की संख्या भी इतनी है। (उस वक़्त मुसलमानों की संख्या छः करोड़ थी। अब तो लगभग पचास साठ करोड़ है बल्कि इस से ज़्यादा)। फ़रमाया कि अगर इस ज़्यादती संख्या को जो अब तक इन पुस्तकों में हुई है छोड़ भी दिया जाए (अर्थात कि इस के इलावा भी अगर कोई हैं) तो भी हमारे मुख़ालिफ़ एक एक किताब हर एक मुसलमान के हाथ में दे चुके हैं। (जितनी मुसलमानों की संख्या इतनी किताबें लिखी गई हैं। और अब तो विभिन्न माध्यमों से, मीडिया से, सोशल मीडिया से, इंटरनैट से, विभिन्न माध्यमों से ये काम इस से भी बढ़ चुका है। नए नए तरीक़े धारण कर लिए गए हैं। आप फ़रमाते हैं कि मुख़ालिफ़ एक एक किताब हिन्दुस्तान के हर मुसलमान के हाथ में दे चुके हैं)। फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला का जोश ग़ैरत में ना होता और إِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ उस का सच्चा वादा ना होता तो यक़ीनन समझ लो कि इस्लाम आज दुनिया से उठ जाता और इस का नाम तथा निशान तक मिट जाता। मगर नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला का छुपा हुआ हाथ उस की हिफ़ाज़त कर रहा है। मुझे अफ़सोस और दुःख इस बात का होता है कि लोग मुसलमान कहला कर नाते ब्याह के बराबर भी तो इस्लाम का फ़िक्र नहीं करते। (इतनी फ़िक्र भी नहीं जितनी शादी ब्याह के लिए फ़िक्र होती है) और मुझे अक्सर पढ़ने का संयोग हुआ है कि ईसाई औरतें तक मरते वक़्त लाखों रुपया ईसाई धर्म के प्रकाशन और प्रसार के लिए वसीयत कर जाती हैं। (इस ज़माना में ईसाइयों का मदद की तरफ़ रुजहान था तो उनकी औरतें भी क़ुर्बानियां क्या करती थीं) और उनका अपनी ज़िन्दगियों को ईसाइयत के प्रसार में खर्च करना तो हम हर-रोज़ देखते हैं। (इस ज़माना का आप फिर नक़्शा खींचते हैं कि) हज़ारों लेडीज़ मिशनरी घरों और कूचों में फुर्ती (ईसाई औरतें तब्लीग़ कुर्ती फुर्ती हैं) और जिस तरह बन पड़े नक़द ईमान छीनती फिरती हैं। फ़रमाया कि मुसलमानों में से किसी एक को नहीं देखा कि वह पचास रुपया भी इस्लाम के प्रसार लिए वसीयत कर के मरा हो। हाँ शादियों और दुनियावी रस्मों पर तो बेहद खर्च होते हैं (और ये खर्च तो आजकल भी हैं। इस्लाम की ख़िदमत के लिए जो थोड़ा बहुत तथा कथित ख़र्च करते भी हैं, उनके भी जो दुनियावी ख़र्च हैं इन खर्चों की कोई तुलना ही नहीं है) फ़रमाया और क़र्ज़ लेकर भी दिल खोल कर फ़ुज़ूल ख़र्चीयाँ की जाती हैं मगर ख़र्च करने के नहीं तो सिर्फ इस्लाम के लिए नहीं। अफ़सोस! अफ़सोस!! इस से बढ़कर और मुसलमानों की हालत रहम योग्य क्या होगी?

(मलफ़ूज़ात जिल्द 1पृष्ठ72 ता 74)

मुसलमानों की अधिकतर का आज भी यही हाल है। यद्यपि कि कुछ बेहतरी कुछ जगहों पर पैदा हुई है लेकिन वह भी जैसा कि मैंने कहा कि दुनियावी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जितना ख़र्च किया जाता है धर्म के लिए उस का दसवां हिस्सा भी नहीं है। यह उस वक़्त के हालात थे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया। अब अगर मुसलमानों के एक हिस्सा को मज़हब की तरफ़ ध्यान पैदा भी हुआ है जैसा कि मैंने कहा तो सिर्फ इस हद तक है कि इस्लाम पर क़ायम रहना है। चलो इस हद तक बेहतरी आई है कि ठीक है बहुत सारे लोग हैं जो इस्लाम पर क़ायम रहना चाहते हैं। कुछ हद तक मस्जिदें भी उन्होंने अपनी आबाद की हैं। लेकिन इस्लाम की शिक्षा को फैलाने के लिए कोई कोशिश नहीं है और अगर कोई तथा कथित कोशिश है तो वो शिद्दत पसंदी की है कि हम ने ज़बरदस्ती इस्लाम को फैलाना है। इस तरह विभिन्न गिरोह बन चुके हैं या मसीह मौऊद की और इस की जमाअत की विरोध के लिए कोशिश हो रही है। अतः हमेशा यह याद रखना चाहिए कि अब अगर इस्लाम दुनिया में फैलना है तो अल्लाह तआला के भेजे हुए इस मामूर के माध्यम ही फैलना है। यह अल्लाह तआला की तक़दीर है।

आने वाले मसीह मौऊद के लिए अल्लाह तआला और इस के रसूल ने कुछ निशानियां भी बताई थीं। यह नहीं कि वह आने वाला बग़ैर किसी निशानी के दावा कर देगा। अतः इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि

"आने वाले का एक यह निशान भी है कि इस ज़माना में माह रमज़ान में चांद ग्रहण लगेगा और सूरज ग्रहण लगेगा। अल्लाह तआला के निशान से ठट्ठा करने वाले ख़ुदा से ठट्ठा करते हैं। चांद सूरज ग्रहण का उस के दावा के बाद होना यह एक इस तरह की बात अमर थी जो झूठ और बनावट से दूर है (इस को इफ़्तिरा नहीं कह सकते। इत्तफ़ाक़ भी नहीं कह सकते। धोखा भी नहीं कह सकते।) फ़रमाया कि इस से पहले कोई चांद सूरज ग्रहण ऐसा नहीं हुआ। यह एक ऐसा निशान था कि जिससे अल्लाह तआला को सारी दुनिया में आने वाले की मुनादी करनी थी। अतः अरब वालों ने भी इस निशान को देखकर अपने मज़ाक़ के अनुसार दरुस्त कहा। हमारे इश्तिहारात बतौर मुनादी जहां-जहां ना पहुंच सकते थे वहां वहां इस चांद सूरज ग्रहण ने आने वाले के वक़्त की मुनादी कर दी। यह ख़ुदा का निशान था जो इन्सानी मन्सूबों से बिलकुल पाक था। चाहे कोई कैसा ही फ़लसफ़ी हो वे ग़ौर करे और सोचे कि जब निर्धारित निशान पूरा हो गया तो ज़रूर है कि इस का मिस्दाक़ भी कहीं हो। यह बात इस तरह ना थी कि जो किसी हिसाब के अधीन हो जैसे कि फ़रमाया था कि यह उस वक़्त होगा जब कोई मुद्दई महदवयित हो चुकेगा (महदी और मसीह का दावा हो चुका होगा तब यह निशान ज़ाहिर होगा।) फ़रमाते हैं कि रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सालम से लेकर इस महदी तक कोई ऐसा घटना नहीं हुई। अगर कोई आदमी तारीख़ से ऐसा साबित करे तो हम मान लेंगे। (मल्फ़ूज़ात जिल्द1 पृष्ठ 48-49)

फिर आप फ़रमाते हैं कि एक और निशान यह भी था कि इस वक़्त सितारा ज़ुस्सीनीन प्रकट होगा। अर्थात उन वर्षों का सितारा जो पहले गुज़र चुके हैं। अर्थात वह सितारा जो मसीह नासरी के दिनों में प्रकट हुआ था। अब वह सितारा भी प्रकट हो गया जिसने यहूदीयों के मसीह की सूचना आसमानी तरीके से दी थी। इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ के देखने से भी पता लगता है।

وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَ اِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝ وَ اِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝ وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝ وَ اِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝ وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ

ये सारी पीशगोइयां क़ुरआन करीम में हैं कि जंगली इकट्ठे किए जाऐंगे। इस की विभिन्न व्याख्याएं हैं। ये भी है कि चिड़ियाघर क़ायम हो गए। ये भी है कि शिक्षा

सुलभ हो के दुनिया में फैल गई। ये भी है कि कुछ स्थानीय लोगों को कुछ क़ौमों ने हमला कर के ख़त्म कर दिया। फिर समुंद्रों के मिलाए जाने का भी है। लोगों के मिलाए जाने का भी है। अब सम्पर्क के आसान तरीक़े हो गए हैं और अब तो एक सैकण्ड में दुनिया में हर जगह सम्पर्क हो जाते हैं। फिर ये है कि औरत जिस पर उस वक़्त जो ज़ुल्म होता था। इस के हुक़ूक़ मारे जाते थे। क़त्ल की जाती थी वह सवाल करेगी कि किस जुर्म में मुझे क़त्ल किया जा रहा है? ग्रन्थ प्रकाशित की जाऐंगे। प्रैस मीडिया है ये सारी चीज़ें साबित करती हैं कि यह ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है और क़ुरआन शरीफ़ में इस की पेशगोईयां मौजूद हैं) आप फ़रमाते हैं अर्थात इस ज़माना में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी। उच्च स्तर की सवारी और सामान ढोने जिनसे पहले ज़माना में हुआ करती थी अर्थात इस ज़माना में सवारी का प्रबन्ध कोई ऐसा उत्तम होगा (अर्थात मसीह के ज़माना में) कि ये सवारियां बेकार हो जाएँगी। इस से रेल का ज़माना मुराद था (और ये भी आप की एक पेशगोई थी तो उस के अनुसार अब तो रेल मदीना और मक्का के बीच भी चल पड़ी है या रेलवे लाईन बिछा दी गई है।) फ़रमाते हैं कि वे लोग जो ख़्याल करते हैं कि इन आयतों का सम्बन्ध क़यामत से है वे नहीं सोचते कि क़यामत में ऊंटनियां गर्भवती कैसे रह सकती हैं क्योंकि इशार से अभिप्राय गर्भवति ऊंटनियां हैं। फिर लिखा है कि इस ज़माना में चारों तरफ़ नहरें निकाली जाएँगी और किताबें बहुत अधिक प्रकाशित होंगी। अत: ये सब निशान इसी ज़माना के बारे में थे। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 49-50)

फिर आप और दलील देते हुए फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद ने कहाँ मबऊस होना था? अब रहा मकान के बारे में। अत: याद रहे कि दज्जाल का निकलना पूर्व में बताया गया है जिससे हमारा देश अभिप्राय है। अत: हुजज अलकिरामा के लेखक ने लिखा है कि फ़ितना दज्जाल का प्रकट होना हिन्दुस्तान में हो रहा है और यह ज़ाहिर है कि मसीह का प्रकटन भी उसी जगह हो जहां दज्जाल हो। फिर उस गांव का नाम कदा क़रार दिया है जो कादियान का संक्षिप्त है। यह संभव है कि यमन के इलाक़ा में भी इस नाम का कोई गांव हो। आप फ़रमाते हैं कि संभव है कि यमन के इलाक़ा में भी इस नाम का कोई गांव हो। कहा जाता है लेकिन यह याद रहे कि यमन हिजाज़ से पूर्व में नहीं बल्कि दक्षिण में है।

फ़रमाया कि ..... इस के इलावा ख़ुद अल्लाह तआला ने इस विनीत का नाम जो रखवाया है तो वो भी एक सूक्ष्म इशारा इस तरफ़ रखता है क्योंकि ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की गिनती जमल के ज्ञान से पूरे तेरह सौ निकलते हैं। (जो हुरूफ़ अबजद के नंबर बनते हैं उस के हिसाब से यह तेरह सौ निकलते हैं) अर्थात इस नाम का इमाम चौदहवीं सदी के आरम्भ पर होगा। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इशारा उसी तरफ़ था। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ50)

फिर आप निशानों के बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि "हवादिस भी एक निशानी थी (विभिन्न किस्म की आफ़तें आयेंगी , हादसे होंगे।) फ़रमाया कि आकाशयी प्रकोपों ने अकाल, ताऊन और हैज़ा की सूरत पकड़ ली। ताऊन वह ख़तरनाक अज़ाब है कि उसने गर्वनमेण्ट तक को ज़लज़ला में डाल दिया (जिस ज़माना में आप वर्णन फ़र्मा रहे हैं उस ज़माना में ये पाँच छ: साल रही और बड़ी ख़ौफ़नाक तबाही फैलाई) और अगर उस का क़दम बढ़ गया तो मुलक साफ़ हो जाएगा (इतनी तेज़ी से फैल रहा था।) फिर फ़रमाते हैं कि धरती की तबाहियां, लड़ाईयां, ज़लज़ल थे जिन्होंने मुल्क को तबाह किया (और ज़मीनी लड़ाईयां तो अभी भी इसी तरह जारी हैं।) अल्लाह तआला के मामूर के लिए यह भी ज़रूर है कि वह अपने सबूत में आसमानी निशान दिखाए। फ़रमाया कि एक लेखराम का निशान क्या कुछ कम निशान था? एक कुश्ती के तौर पर कई साल तक एक शर्त बधी रही। पाँच साल तक बराबर जंग होती रहा। दोनों पक्षों ने इश्तिहार दिए, आम शोहरत हो गई (हर तरफ़ लेखराम की घटना मशहूर हो गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम से मुक़ाबला हो रहा है)। ऐसी शोहरत कि जिसका उदाहरण भी असम्भव है। फिर ऐसी ही घटना हुई जैसे कि कहा गया था। क्या इस घटना का कोई और उदाहरण है? धर्म महोत्सव के बारे में भी कई दिन पहले ऐलान किया कि हम को अल्लाह तआला ने सूचना दी है कि हमारा मज़मून सब पर ग़ालिब रहेगा। जिन लोगों ने इस महान और रोब वाले जलसा को देखा है वे ख़ुद ग़ौर कर सकते हैं कि ऐसे जलसा में ग़लबा पाने की ख़बर समय से पहले देना कोई अटकल या क़ियास ना था। फिर आख़िर वही हुआ जैसे कहा गया।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 50 से 51)

आपकी किताब जो इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी है यह उस के बारे में था। इस के बारे में इस ज़माना का एक अख़बार जनरल व गोहर आसफी कलकत्ता है। इस का एक वर्णन पढ़ देता हूँ। वह लिखता है कि अगर इस जल्सा में हज़रत मिर्ज़ा साहिब का मज़मून ना होता तो इस्लामियों पर ग़ैर दर्मों वालों के सामने ज़िल्लत- तथा शर्म का टीका लगता। मगर ख़ुदा के ज़बरदस्त हाथ ने मुक़द्दस इस्लाम को गिरने से बचा लिया बल्कि उस को इस मज़मून की बदौलत ऐसी फ़तह नसीब फ़रमाई कि अपने तो अपने मुख़ालिफ़ीन भी सच्ची फ़ितरती जोश से कह उठे कि यह मज़मून सब पर विजयी रहा है। ग़ालिब है।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 572)

अब यह लिखने वाला कोई अहमदी नहीं बल्कि एक ग़ैर है लेकिन मजबूर हुए और ग़ैरों के भी हवाले दे रहे हैं और इस तरह के बेशुमार अख़बारों ने लिखा।

फिर आप इलाही मामूर होने की गवाहियां प्रस्तुत करते हुए फ़रमाते हैं कि

"अत: इस वक़्त मेरे मामूर होने पर बहुत सारी गवाहियां हैं। प्रथम अंदरूनी गवाही। द्वितीय बाहरी गवाही। तृतीय सदी के सिर पर आने वाले मुजद्दिद के बारे में हदीस सही। चतुर्थ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (सूरह अल्हिजर 10) अब पांचवीं बड़ी गवाही मैं प्रस्तुत करता हूं और वह सूरत नूर में वादा इस्तेख़लाफ है इस में अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(सूरह नूर 56) इस आयत में वादा इस्तेख़लाफ के अनुसार जो ख़लीफे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिलसिले में होंगे वे पहले ख़लीफों की तरह होंगे। इस तरह कुरआन शरीफ में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का मसील क़रार दिया गया है जैसा फरमाया

اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۢ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا

(सूरह अल्मुज़म्मिल 16) और आप को मूसा का मसील इस्तिस्ना की पेशगोई के अनुसार भी हैं। (बाइबल में पेशगोई है।) अत: इस समानता में जैसे "कमअ" का शब्द फ़रमाया गया है वैसे ही सूरा नूर में "कमअ" का शब्द है। इस से साफ़ मालूम होता है कि मूसवी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला में समानता और पूर्ण समानता है। मूसवी सिलसिला के खलीफ़ा का सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर आकर ख़त्म हो गया था और वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौदहवीं सदी में आए थे। इस समानता के लिहाज़ से कम से कम इतना तो ज़रूरी है कि चौदहवीं सदी में एक ख़लीफ़ा इसी रंग तथा क़ुव्वत का पैदा हो जो मसीह से समानता रखता हो और इस के आचरण और क़दम पर हो। अत: अगर अल्लाह तआला इस बात की और दूसरी गवाहियां और समर्थन ना भी प्रस्तुत करता तो ये सिलसिला समानता का चाहता था कि चौदहवीं सदी में ईसवी बरोज़ आप की उम्मत में हो वर्ना आप की समानता में मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) एक कमी और कमज़ोरी साबित होती लेकिन अल्लाह तआला ने ना सिर्फ इस समानता की तसदीक़ और सहायता फ़रमाई बल्कि यह भी साबित कर दिखाया कि मसील मूसा मूसा से और सारे अंबिया अलैहिम अस्सलाम से अफ़ज़ल है। (अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे नबियों से अफ़ज़ल हैं।)

फ़रमाते हैं कि "हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जैसे अपनी कोई शरीयत लेकर ना आए थे बल्कि तौरेत को पूरा करने आए थे। इसी तरह पर मुहम्मदी सिलसिला का मसीह अपनी कोई शरीयत लेकर नहीं आया बल्कि क़ुरआन शरीफ़ के जीवित करने के लिए आया है। (इस को ज़िन्दा करने के लिए आया है। क़ुरआन करीम की शिक्षा फैलाने के लिए आया है) और इस पूर्णता के लिए आया है जो तकमील इशाअत-ए-हिदायत कहलाती है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द नंबर 4 पृष्ठ 9-10)

फिर आप इस बारे में और अधिक फ़रमाते हैं कि "तकमील इशाअत हिदायत के बारे में याद रखना चाहिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो नेअमत की पूर्णता और धर्म की पूर्णता हुई (थी अर्थात धर्म अपने कमाल को पहुंच गया और नेअमत अपने इंतिहा को पहुंच गई जहां तक पहुंच सकती थी) तो इस की दो सूरतें हैं। प्रथम तकमील हिदायत दूसरी तकमील इशाअत हिदायत। आप फ़रमाते हैं तकमील हिदायत सम्पूर्ण रूप से आप के प्रथम आगमन के अवसर पर हुई (हिदायत की पूर्णता आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत से, शरीयत उतरने से हुई) और तकमील इशाअत हिदायत (इस हिदायत की, शरीयत की जो इशाअत होनी है वह) आप के दूसरे आगमन से हुई क्योंकि सूर: जुम्म: में जो आख़रीन मिन्हुम वाली आयत आप के फ़ैज़ और शिक्षा से एक और क़ौम के तैयार करने की हिदायत करती है इस से साफ़ मालूम होता है कि आप की एक बिअसत और है और यह बिअसत बरोज़ी रंग में है। (एक ज़िल्ली है) जो इस वक़्त हो रही

है। अत: यह वक़्त तकमील इशाअत हिदायत का है और यही वजह है कि इशाअत के तमाम ज़रीये और सिलसिले मुकम्मल हो रहे हैं। छापा ख़ानों की कसरत (है। प्रैस बेशुमार है) और आए दिन उनमें नई बातों का पैदा होना (प्रैस में भी ज़्यादा सविधाएं मिल रही हैं। बल्कि जदीद टैक्नोलोजी इस में प्रयोग हो रही है) डाकख़ानों, तारों, रेलों, जहाज़ों का जारी होना और अख़बारों का प्रकाशन, इन सब मामलों ने मिल मिला कर दुनिया को एक शहर के हुक्म में कर दिया है। अत: ये तरक़्क़ियां भी दरअसल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही तरक़्क़ियां हैं क्योंकि इस से आप की कामिल हिदायत के कमाल का दूसरा भाग हिदायत की पूर्णता का प्रकाशन पूरा हो रहा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 9-10)

और फ़रमाते हैं कि अब इन बातों को एक साथ कर के ध्यान पूर्वक देखें कि जो कुछ हम कहते हैं क्या वह इस योग्य है कि सरसरी निगाह से उसे रद्द कर दिया जाए? या यह कि इस पर पूरे ग़ौर और फ़िक्र से काम लिया जाए। जो कुछ हमारा दावा है क्या यह सदी के सिर पर है या नहीं? अगर हम ना आते तब भी हर एक अक़लमंद और ख़ुदा से भय रखने को लाज़िम था कि वह किसी आने वाले की तलाश करता क्योंकि सदी का सिर आ गया था और अब तो जबकि बीस वर्ष गुज़रने को हैं और भी ज़्यादा फ़िक्र की ज़रूरत थी। वर्तमान फ़साद अपनी जगह पुकार पुकार कर कह रहा था कि कोई शख़्स उस के सुधार के लिए आना चाहिए। फ़रमाया कि ईसाइयत ने वह आज़ादी और बे-क़ैदी फैलाई है जिसकी कोई हद ही नहीं है और मुसलमानों के बच्चों पर जो इस का असर हुआ है उसे देखकर कहना पड़ता है कि मुसलमानों के बच्चे ही नहीं हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4पृष्ठ13-14)

आप फ़रमाते हैं कि हक़ मालूम करने का माध्यम क्या होना चाहिए? किस तरह हक़ मालूम करो? फ़रमाते हैं ख़ुदा तआला से अपनी नमाज़ों में दुआएं मांगें कि वह उन पर हक़ खोल दे और मैं यक़ीन रखता हूँ कि अगर इन्सान द्वेष और ज़िद से पवित्र हो कर हक़ के इज़्हार के लिए ख़ुदा तआला की तरफ़ ध्यान करेगा तो एक चिल्ला ना गुज़रेगा (चालीस दिन नहीं गुज़रेंगे) कि इस पर हक़ खुल जाएगा मगर बहुत ही कम लोग हैं जो इन शर्तों के साथ ख़ुदा तआला से फ़ैसला चाहते हैं और इस तरह पर अपनी कम समझी या ज़िद तथा द्वेष की वजह से ख़ुदा के वली का इन्कार कर के ईमान छिना लेते हैं क्योंकि जब वली पर ईमान ना रहे तो वली जो नबुव्वत के लिए बतौर कील के है उसे फिर नबुव्वत का इनकार करना पड़ता है और नबी के इनकार से ख़ुदा का इनकार होता है और इस तरह पर बिलकुल ईमान छिन जाता है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4पृष्ठ16)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के इन कुछ हवालों के बाद अब मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के विभिन्न हवाले प्रस्तुत करता हूँ जो आप ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में विभिन्न जगहों पर प्रस्तुत फ़रमाए। एक जगह आप फ़रमाते हैं कि

"जब विरोध तरक़्क़ी करता है तो जमाअत को भी तरक़्क़ी हासिल होती है और जब विरोध बढ़ता है तो अल्लाह तआला के चमत्कार पूर्ण समर्थन और सहायताएं भी बढ़ जाती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से आप वर्णन फ़रमाते हैं कि इसी लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में जब कोई दोस्त यह ज़िक्र करते कि हमारे हाँ बड़ा विरोध है तो आप फ़रमाते यह तुम्हारी तरक़्क़ी की निशानी है। जहां विरोध होती है वहां जमाअत भी बढ़ती है क्योंकि विरोध के नतीजा में कई नावाक़िफ़ लोगों को भी सिलसिला से वाक़फ़ीयत हो जाती है और फिर धीरे धीरे उनके दिल में सिलसिला की किताबें पढ़ने का शौक़ पैदा हो जाता है और जब वे किताबें पढ़ते हैं तो सदाक़त उनके दिलों को मोह लेती है।

फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में एक बार एक दोस्त हाज़िर हुए और उन्होंने आप की बैअत की। बैअत लेने के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने उनसे पूछा कि आपको किस ने तब्लीग़ की थी? वह अपने आप कहने लगे कि मुझे तो मौलवी सना उल्लाह साहिब ने तब्लीग़ की है। (जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े मुख़ालिफ़ थे।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने हैरत से फ़रमाया वह किस तरह? कहते हैं वह कहने लगे में मौलवी-साहिब का अख़बार और उनकी किताबें पढ़ा करता था और मैं हमेशा देखता कि उनमें जमाअत अहमदिया का बहुत विरोध होता थी। एक दिन मुझे ख़्याल आया कि मैं ख़ुद भी तो इस सिलसिला की किताबें देखूं (इतना विरोध जो हो रहा है तो किताबें देखूं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा क्या है) कि उनमें क्या लिखा है। और जब मैंने उन किताबों को पढ़ना शुरू किया तो मेरा सीना खुल गया और मैं बैअत के लिए तैयार हो गया। तो विरोध का पहला फ़ायदा यह होता है कि इस से इलाही सिलसिला को तरक़्क़ी हासिल होती है और कई लोगों को हिदायत मिल जाती है।

(तफ़सीर कबीर जिल्द 6 पृष्ठ 487)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विरोध के हवाले से कि अंबिया किस तरह अपनी विरोध पर रद्द अमल दिखाते हैं। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो इस तरह वर्णन फ़रमाया करते थे। पहले तो मिस्री हुकूमत की पुराने ज़माना की मिसाल दी है।

आप लिखते हैं कि मिस्री हुकूमत अपने ज़माना में बहुत अधिक प्रसिद्ध हुकूमत थी और इस का बादशाह अपनी ताक़त पर नाज़ रखता था (फ़िरऔन थे वहां के) ऐसे बादशाह के मुक़ाबला में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की कोई हैसियत ही नहीं थी मगर बावजूद उस के जब वह बादशाह के पास गए तो यद्यपि बादशाह ने उनको डराया धमकाया और उन्हें और उनकी क़ौम को तबाह बर्बाद कर देने का इरादा ज़ाहिर किया और कहा कि अगर तुम रुक न गए तो तुम्हें भी मिटा दिया जाएगा और तुम्हारी क़ौम को भी मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम रुके नहीं और उन्होंने कहा कि जो पैग़ाम मुझे ख़ुदा ने दुनिया के लिए दिया है वह मैं ज़रूर पहुंचाऊंगा। दुनिया की कोई ताक़त मुझे इस से रोक नहीं सकती फ़रमाते हैं कि यही हालत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की थी। यही हाल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का था और ऐसी ही हालत हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की देखी। सारी कौमें आप की मुख़ालिफ़ थीं। हुकूमत भी एक रंग में आप की मुख़ालिफ़ ही थी यद्यपि आख़िरी ज़माना में यह रंग नहीं रहा (था। विरोध में कुछ कमी हो गई थी।) बहरहाल कौमें आप की मुख़ालिफ़ थीं। सारे धर्मों के अनुयायी आप के मुख़ालिफ़ थे। मौलवी आप के मुख़ालिफ़ थे। गद्दी नशीन आप के मुख़ालिफ़ थे। अवाम आप के मुख़ालिफ़ थे और उमरा तथा विशेष लोग भी आप के दुश्मन थे। अत: चारों तरफ़ विरोध का एक तूफ़ान बरपा था। लोगों ने आप को बहुत कुछ समझाया कुछ ने दोस्त बन-बन कर कहा कि आप अपने दावों में किसी क़दर कमी कर दें। कुछ ने कहा कि अगर आप अमुक अमुक बात छोड़ दें तो सब लोग आप की जमाअत में शामिल हो जाऐंगे मगर आप ने उन में से किसी की भी परवाह ना की और हमेशा अपने दावा को पेश फ़रमाते रहे। इस पर शोर होता रहा। मारें पड़ती रहीं। क़त्ल होते रहे मगर बावजूद इन सारी तकलीफ़ों के (और ये अब तक जारी हैं) और बावजूद उस के कि आप का मुक़ाबला एक ऐसी दुनिया से था जिसका मुक़ाबला करने की ज़ाहरी सामानों की दृष्टि से आप में हरगिज़ ताक़त ना थी फिर भी आप ने अपने मुक़ाबला को जारी रखा बल्कि मुझे ख़ूब याद है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि मुझे याद है कि मैंने कई बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम से सुना कि नबी का उदाहरण तो वैसा ही होता है जैसे लोग कहते हैं कि एक गांव में एक पागल औरत रहती थी जब भी वह बाहर निकलती छोटे छोटे लड़के इकट्ठे हो कर उसे छेड़ने लग जाते। उस के साथ मज़ाक़ करते (उसे तंग करते)... उसे बार-

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

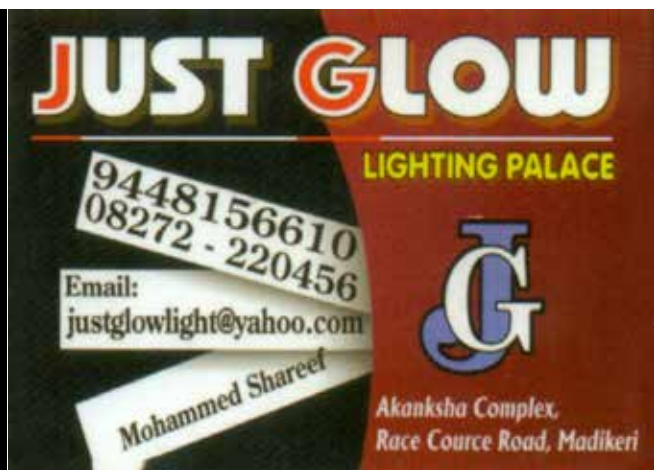

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

बार तंग करते। वह भी मुक़ाबला में इन लड़कों को गालियां देती और बद-दुआएँ देती। आख़िर एक दिन गांव वालों ने आपस में मश्वरा किया कि यह औरत मज़लूम है और हमारे लड़के उसे अत्याचार पूर्वक तंग करते रहते हैं। पीड़ित होने की की हालत में यह उन्हें बद-दुआएँ देती है कहीं ऐसा ना हो उस की बद-दुआएँ कोई रंग लाएं (क़बूल हो जाएं कहीं) हमें चाहिए कि अपने लड़कों को रोक लें ताकि ना वह उसे तंग करें और ना यह बद-दुआएँ दे। अत: इस मश्वरा के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि कल से सब गांव वाले अपने लड़कों को घरों में बंद रखें और उन्हें बाहर ना निकलने दें। अत: दूसरे दिन सब लोगों ने अपने अपने लड़कों से कह दिया कि आज से बाहर नहीं निकलना और अधिक सावधानी के तौर पर उन्होंने बाहर के दरवाज़ों की ज़ंजीरें लगा दें (ताले लगा दिए।) जब दिन चढ़ा और वह पागल औरत आदत के अनुसार अपने घर से निकली तो कुछ समय तक वह इधर उधर गलियों में फिरती रही। कभी एक गली में जाती और कभी दूसरी (गली) में मगर उसे कोई लड़का नज़र ना आया। पहले तो यह हालत हुआ करती थी कि कोई लड़का उस के दामन को घसीट रहा है। कोई उसे चुटकी काट रहा है। कोई उसे धक्का दे रहा है। कोई उस के हाथों के साथ चिमटा हुआ है और कोई इस से मज़ाक़ कर रहा है मगर आज उसे कोई लड़का दिखाई ना दिया। दोपहर तक तो उसने इंतज़ार किया मगर जब देखा कि अब तक भी कोई लड़का अपने घर से नहीं निकला तो वह दुकानों पर गई और हर दुकान पर जा कर कहती कि आज तुम्हारा घर गिर गया है? बच्चे मर गए हैं? आख़िर क्या हुआ किया है कि वह नज़र नहीं आते? थोड़ी देर के बाद जब इस तरह उसने हर दुकान पर जा कर कहना शुरू किया तो लोगों ने कहा गालियां तो इस तरह भी मिलती हैं और इस तरह भी। छोड़ो बच्चों को। उनको क़ैद क्यूँ कर रखा है। आप यह हिकायत वर्णन कर के फ़रमाया करते थे कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम का हाल भी अपने रंग में ऐसा ही हुआ करता है। दुनिया उनको छेड़ती है। तंग करती है। इन पर ज़ुल्म तथा सितम ढाती है और इस क़दर ज़ुल्म करती है कि उनके लिए ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल हो जाता है और एक वर्ग के दिल में यह एहसास पैदा होना शुरू हो जाता है कि लोग ज़ुल्म से काम ले रहे हैं। उन्हें नहीं चाहिए कि ऐसा करें मगर फ़रमाया वह भी दुनिया को नहीं छोड़ सकते। जब दुनिया उनको नहीं सताती तो वह ख़ुद उस को झिंझोड़ते और बेदार करते हैं ताकि दुनिया उनकी तरफ़ ध्यान दे और उनकी बातों को सुने।

(उद्धरित ख़ुतबाते महमूद जिल्द 24 पृष्ठ 272 से 274)

चाहे वह किसी तरह सुने। विरोध में भी फिर अच्छे लोग निकल आते हैं।

आप फ़रमाते हैं कि "मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के जवानी के दोस्त और आप से सम्बन्ध रखने वाले थे और जो हमेशा आप के निबन्धों की तारीफ़ किया करते थे उन्होंने इस दावा के शीघ्र बाद, (आप के दावा के शीघ्र बाद) यह ऐलान किया कि मैंने ही इस शख़्स को बढ़ाया था और अब मैं ही उसे तबाह कर दूँगा। उस वक़्त कौन सोच सकता था कि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी जैसा सम्माननीय और प्रभाव वाला इन्सान किसी के बारे में यह कहे कि मैं उसे तबाह कर दूँगा और फिर वह तबाह भी ना हो। (वह वास्तव में ऐसे प्रभाव वाले इन्सान थे कि जब कहते थे तो कर भी सकते थे।)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने रिश्तेदारों ने भी ऐलान कर दिया बल्कि कइयों ने, (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ रिश्तेदारों ने) अख़बारों में यह ऐलान भी छपवा दिया कि इस आदमी ने दुकानदारी चलाई है। इस की तरफ़ किसी को ध्यान नहीं करना चाहिए और इस तरह सारी दुनिया को उन्होंने बदगुमान करने की कोशिश की। फिर आप फ़रमाते हैं कि यह मेरे होश की बात है कि बहुत से काम करने वाले लोगों ने जो ज़मींदार इंतिज़ाम में कम्मी कहलाते हैं आप के घर के कामों से इनकार कर दिया। (जो आप के मुलाज़िम थे उन्होंने भी काम से बिल्कुल इनकार कर दिया) उस के मुहर्रिक वास्तव में हमारे रिश्तेदार ही थे। अत: अपनों और बेगानों ने मिलकर आप को मिटाना और आपको तबाह तथा बर्बाद करना चाहा।

(उद्धरित अलफ़ज़ल 13 नवंबर 1940 ई पृष्ठ 2-3 जिल्द 28 नंबर 258)

लेकिन हुआ क्या! आज आपका नाम दुनिया के 212 देशों में लिया जाता है। यह आप की सदाक़त नहीं तो और किया है?

फिर एक और निशान सदाक़त वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हमारे अंदर पैदा किया और आप का वजूद हमारे लिए स्पष्ट निशान बन गया। जो शख़्स भी आप के पास बैठा उस को क़ुरआन करीम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई नज़र आ गई और कोई चीज़ उस को इस्लाम से हटाने वाली ना रही। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर जब करमदीन भीं वाला मुक़द्दमा हुआ तो मजिस्ट्रेट हिंदू था। आर्यों ने उसे बहकाया और कहा कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ज़रूर कुछ ना कुछ सज़ा दे और उसने ऐसा करने का वादा भी कर लिया। ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने जब यह बात सुनी तो डर गए। वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में गुरदासपुर हाज़िर हुए जहां मुक़द्दमा के दौरान में आप ठहरे हुए थे और कहने लगे कि हुज़ूर बड़े फ़िक्र की बात है। आर्यों ने मजिस्ट्रेट से कुछ ना कुछ सज़ा देने का वादा ले लिया है। इस वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेटे हुए थे। आप फ़ौरन उठकर बैठ गए और फ़रमाया ख़्वाजा साहिब! ख़ुदा के शेर पर कौन हाथ डाल सकता है! मैं ख़ुदा का शेर हूँ। वे मुझ पर हाथ डाल कर तो देखें। अत: ऐसा ही हुआ। फ़रमाते हैं दो मजिस्ट्रेट थे जिनकी अदालत में एक के बाद अन्य के यह मुक़द्दमा पेश हुआ और इन दोनों को बड़ी सख़्त सज़ा मिली। (जो आप के ख़िलाफ़ करना चाहते थे) उनमें से एक तो मुअत्तल हुआ और एक का बेटा दरिया में डूब कर मर गया और वह इसी ग़म में पागल हो गया। इस पर इस घटना का इतना असर था, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह फरमाते हैं कि एक बार में दिल्ली जा रहा था कि वह लुधियाना के स्टेशन पर मुझे मिला और बड़े विनय से, (बड़ी लजाजत से, बड़े दर्द से) कहने लगा कि दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे सब्र की तौफ़ीक़ दे। मुझ से बड़ी बड़ी गलतियां हुई हैं और मेरी हालत ऐसी है कि मैं डरता हूँ कि मैं कहीं पागल ना हो जाऊं। आप ने फ़रमाया कि उन्होंने कहा कि मेरा एक बेटा है दुआ करें, (एक बेटा तो मर गया। अब एक बेटा और है दुआ करें) कि अल्लाह तआला उसे और मुझे दोनों को ही तबाही से बचाए। (जो हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया था)। आप लिखते हैं कि अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बात पूरी हुई कि ख़ुदा तआला के शेर पर कौन हाथ डाल सकता है और आर्यों को उनके मक़सद में नाकामी हुई।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर जिल्द 6 पृष्ठ 359)

फिर आप लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के ज़माना का एक दिलचस्प घटना है। आप के एक दोस्त थे जो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के भी दोस्त थे। उनका नाम निज़ामुद्दीन था। उन्होंने सात हज किए थे। बहुत हँसमुख और ख़ुश-मिज़ाज थे। चूँकि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी दोनों से दोस्ताना सम्बन्ध रखते थे इसलिए जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा मामूरीयत किया और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने आप पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया तो उनके दिल को बड़ी तकलीफ़ हुई क्योंकि उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नेकी पर बहुत यक़ीन था। वह लुधियाना में रहा करते थे और विरोधी लोग जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ कुछ कहते तो वह उनसे झगड़ पड़ते और कहते कि तुम पहले हज़रत मिर्ज़ा साहिब की हालत तो जा कर देखो वह तो बहुत ही नेक आदमी हैं। और मैंने उनके पास रह कर देखा है कि अगर उन्हें क़ुरआन मजीद से कोई बात समझा दी जाए तो वह फ़ौरन मानने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह धोखा हरगिज़ नहीं करते। (कभी धोखा नहीं करते) अगर उन्हें क़ुरआन करीम से समझा दिया जाएगा कि उनका दावा ग़लत है तो मुझे यक़ीन है कि वह फ़ौरन मान जाएंगे। बहुत बार वह लोगों के साथ इस बात में झगड़ते और कहा करते थे कि जब मैं कादियान जाऊँगा तो देखूँगा कि वो किस तरह अपने दावा से तौबा नहीं करते। मैं क़ुरआन खोल कर उन के सामने रख दूँगा और जिस वक़्त मैं क़ुरआन की कोई आयत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़िन्दा आसमान पर जाने के बारे में बताऊँगा तो वह फ़ौरन मान जाऐंगे। वह कहने लगे कि मैं ख़ूब जानता हूँ कि वह क़ुरआन की बात सुनकर फिर कुछ नहीं कहा करते। आख़िर एक दिन उन्हें ख़्याल आया और लुधियाना से कादियान पहुंचे। आते ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि क्या आप ने इस्लाम छोड़ दिया है और क़ुरआन से इनकार कर दिया है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह किस तरह हो सकता है। क़ुरआन को तो मैं मानता हूँ और इस्लाम मेरा मज़हब है। कहने लगे कि अलहमदो लिल्लाह। मैं लोगों से यही कहता रहता हूँ कि वह क़ुरआन को छोड़ ही नहीं सकते। फिर कहने लगे अच्छा अगर मैं क़ुरआन मजीद से सैंकड़ों आयतें इस बात के सबूत में दिखा दूं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा चले गए हैं तो क्या आप मान जाऐंगे? हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया सैंकड़ों आयात का क्या ज़िक्र है। अगर आप एक ही आयत मुझे ऐसी दिखा देंगे तो मैं मान लूँगा। कहने लगे अलहमदो लिल्लाह। मैं

लोगों से यही बहस करता आया हूँ कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब से मनवाना तो कुछ मुश्किल बात नहीं है। यूंही लोग शोर मचाते हैं।

फिर कहने लगे अच्छा सैंकड़ों ना सही में अगर सौ आयतें ही हयात मसीह के सबूत में प्रस्तुत कर दूं तो क्या आप मान लेंगे? हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने कि कहा मैंने तो कह दिया है कि अगर आप एक ही आयत ऐसी प्रस्तुत कर देंगे तो मैं मान लूँगा। क़ुरआन मजीद की जिस तरह सौ आयतों पर अमल करना ज़रूरी है इसी तरह उस के एक एक शब्द पर अमल करना ज़रूरी है। एक या सौ आयतों का सवाल ही नहीं। कहने लगे अच्छा सौ ना सही पच्चास आयतें अगर मैं प्रस्तुत कर दूं तो क्या आपका वादा रहा कि आप अपनी बात छोड़ देंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर फ़रमाया मैं तो कह चुका हूँ कि आप एक ही आयत प्रस्तुत करें मैं मानने के लिए तैयार हूँ। अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जैसे-जैसे इस बात पर पुख़्तगी का इज़हार करते जाएं उन्हें शंका होती जाए कि शायद इतनी आयतें क़ुरआन में ना हूँ। आख़िर कहने लगे अच्छा दस आयतें अगर मैं प्रस्तुत कर दूं तो फिर ज़रूर मान जाएंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हंस पड़े और फ़रमाया मैं तो अपनी पहली ही बात पर क़ायम हूँ। आप एक आयत ही प्रस्तुत करें। कहने लगे अच्छा अब मैं जाता हूँ चार पाँच दिन तक आऊँगा और आप को क़ुरआन से ऐसी आयतें दिखला दूँगा। इन दिनों मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी लाहौर में थे और हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल भी वहीं थे और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी से इस वक़्त मुबाहिसा के लिए शर्तों का फैसला हो रहा था जिस के लिए आपस में ख़त लिखे जा रहे थे। मुबाहसा का विषय वफ़ात मसीह था। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी यह कहते थे कि चूँकि क़ुरआन मजीद की मुफ़स्सिर हदीस है इसलिए जब हदीसों से कोई बात साबित हो जाए तो वह क़ुरआन मजीद की ही बात समझी जाएगी। इसलिए हदीसों की दृष्टि से वफ़ात तथा हयात मसीह पर बहस होनी चाहिए और हज़रत मौलवी साहिब फ़रमाते थे कि क़ुरआन मजीद हदीस पर मुक़द्दम है। इसलिए प्रत्येक अवस्था में क़ुरआन से ही अपने मुद्दा को साबित करना होगा। इस पर बहुत दिनों बहस रही और बहस को मुख़्तसर करने के लिए और इसलिए किता किसी ना किसी तरह मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी से मुबाहिसा हो जाए हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि उस की बहुत सी बातों को स्वीकार करते चले गए कि ठीक है। यह भी ठीक है और मौलवी मुहम्मद हुसैन बहुत ख़ुश थे कि जो शर्तें मैं मनवाना चाहता हूँ वह मान रहे हैं।

इस दौरान में मियां निज़ामुद्दीन साहिब भी वहां पहुंचे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जब विदा हुए तो उनके पास पहुंचे और कहने लगे अब सारी बहसें बंद कर दो। मैं अब हज़रत मिर्ज़ा साहिब से मिलकर आया हूँ और वह बिलकुल तौबा करने के लिए तैयार बैठे हैं। मैं चूँकि आपका भी दोस्त हूँ और मिर्ज़ा साहिब का भी इसलिए मुझे इस मतभेद से बहुत तकलीफ़ हुई है। मैं यह भी जानता था कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की तबीयत में नेकी है इसलिए में उनके पास गया और उनसे वादा लेकर आया हूँ कि क़ुरआन से दस आयतें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर जाने के बारे में दिखा दी जाएं तो वह हयात मसीह अलैहिस्सलाम के मानने वाले हो जाऐंगे। आप मुझे ऐसी दस आयतें बतला दें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह लिखते हैं मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी की तबीयत में बड़ा ग़ुस्सा था। वह बहुत जल्दबाज़ थे। उसे अपने दोस्त को कहने लगे कि कम्बख़्त तूने मेरा सारा काम ख़राब कर दिया। मैं दो महीने से बेहस कर के उनको हदीस की तरफ़ लाया था अब तो फिर क़ुरआन की तरफ़ ले गया है। मियां निज़ामुद्दीन कहने लगे अच्छा तो दस आयतें भी आपके समर्थन में नहीं हैं! वह कहने लगा तो जाहिल आदमी है तुझे क्या पिता कि क़ुरआन का क्या अर्थ है? जब यह बातें मौलवी-साहिब ने मियां निज़ामुद्दीन को कह दीं तो वह कहने लगा अच्छा तो फिर जिधर क़ुरआन है उधर ही मैं भी हूँ। यह कह कर वह कादियान आए और उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत कर ली। तो इस तरह उनकी बैअत की घटना थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं देखो क़ुरआन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को किस क़दर भरोसा था और आप कितने विश्वास से फ़रमाते थे कि क़ुरआन आप के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। इस का यह अर्थ तो नहीं कि क़ुरआन का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ कोई ख़ास रिश्ता है या उस का जमाअत अहमदिया से ख़ास सम्बन्ध है। क़ुरआन तो सच्चाई की राह दिखाएगा और जो पक्ष सच पर होगा उस का समर्थन करेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को चूँकि यक़ीन था कि आप हक़ पर हैं इसलिए क़ुरआन भी आप के साथ था। यही वजह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि अगर मेरा कोई दावा क़ुरआन के अनुसार ना हो तो मैं उसे रद्दी की टोकरी में फेंक दूं। इस का यह अर्थ तो हरगिज़ नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने दावे के बारे में कोई शंका थी बल्कि यह कहने की वजह यह थी कि आप को यक़ीन था कि क़ुरआन मेरी तसदीक़ ही करेगा। यह उम्मीद है जिसने हमें दुनिया में कामयाब कर दिया है।

(उद्धरित ख़ुतबाते महमूद जिल्द 13 पृष्ठ 416 से 418)

और यह आज भी हमारी कामयाबियों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को दुनिया में फैलाने का माध्यम है और निसन्देह क़ुरआन हमारे ही साथ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"निसन्देह याद रखो कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं। उसने अपने वादा के अनुसार दुनिया में एक नज़ीर भेजा है। दुनिया ने उस को क़बूल ना किया मगर ख़ुदा तआला उस को ज़रूर क़बूल करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उस की सच्चाई को ज़ाहिर करेगा। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि मैं ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार मसीह मौऊद हो कर आया हूँ। चाहो तो क़बूल करो चाहो तो रद्द करो। मगर तुम्हारे रद्द करने से कुछ ना होगा। ख़ुदा तआला ने जो इरादा फ़रमाया है वह हो कर रहेगा क्योंकि ख़ुदा तआला ने पहले से बराहीन में फ़र्मा दिया है صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا

(मलफ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 206)

कि अल्लाह और इस के रसूल ने जो कहा है वो सच हुआ और ख़ुदा तआला का हुक्म पूरा होता है।

अब मैं पिछले जुम्अ: को न्यूज़ीलैण्ड में जो घटना हुई थी उस के बारे में थोड़ा सा कुछ कहना चाहता हूँ। पिछले जुम्अ:में ही कहना था लेकिन आख़िर में वह ज़हन से निकल गया। बहरहाल उस के बाद में ने एक प्रैस रिलीज़ दिलवा दी थी जहां जमाअत की तरफ़ से इस पर अफ़सोस का इज़हार किया गया था कि कई बेगुनाह और मासूम और बच्चे मज़हबी और क़ौमी नफरत की भेंट चढ़ गए और शहीद किए गए। अल्लाह तआला इन सब पर रहम फ़रमाए। उनसे रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके सगे सम्बिन्धयों को सब्र प्रदान फ़रमाए।

कुछ बातें बाद में भी आ गईं तो इस मौक़ा पर ना वर्णन करने का फ़ायदा इस लिहाज़ से हो गया कि न्यूज़ीलैंड की हुकूमत ने और विशेष रूप से वज़ीरे आज़म ने जिन उच्च आचरण को प्रकट किया है और हुकूमत के फ़र्ज़ अदा करने का हक़ अदा किया है वह भी अपनी मिसाल आप है। काश कि मुसलमान हुकूमतें भी इस से सबक़ लें और मज़हबी नफरतों को ख़त्म करने में अपना किरदार अदा करने वाली हूँ। वहां के लोगों ने भी पूरा साथ दिया। सुना है कि आज जुम्अ: को रेडियो और टेलीविज़न ने यह भी ऐलान किया था कि जुम्अ: के वक़्त में मुसलमानों से एकता के सुलूक के तौर पर, टेलीविज़न और रेडीयो पर अज़ानें भी दी जाएँगी। ग़ैर मुस्लिम औरतों ने, ईसाई औरतों ने भी एकता के इज़हार के तौर पर सिर पर स्कार्फ और दुपट्टा लेने का ऐलान किया। अल्लाह तआला उनकी इन नेकियों को क़बूल करते हुए उनको सच्चाई और हक़ पहचानने की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

वहां मस्जिद में बहुत से लोग जो मुसलमान थे जिन को इस ज़ालिम क़ातिल ने शहीद किया उनमें से एक औरत का टीवी पर इंटरव्यू आ रहा था और ग़ैर मामूली सब्र और हौसला उसने दिखाया। उनका पति भी और 21 वर्ष का नौजवान बेटा भी इस की भेंट चढ़ गए और वह इस तरह कि लोगों की मदद करते हुए उन्होंने अपनी जान दी है तो बहरहाल एक नेकी के लिए और नेक मक़सद के लिए जान दी। अल्लाह तआला उनसे रहम का सुलूक फ़रमाए। यह एक इंतिहाई अफ़सोस दायक घटना है और वहां के मुसलमानों ने तो बड़े सब्र और हौसले का मुज़ाहरा किया है और यही एक मुसलमान से आशा की जा सकती है और यही एक इज़हार है जो मुसलमान को करना चाहिए लेकिन कुछ शिद्दत-पसंद गिरोहों ने यह ऐलान किया है कि हम उस का बदला लेंगे हालाँकि बहुत ग़लत चीज़ है। इस तरह तो दुश्मनियां चलती चली जाएँगी। अल्लाह तआला करे कि इस्लाम के अंदर जो उग्रपन्थी गिरोह हैं उनका भी ख़ात्मा हो और इस्लाम की वास्तविक और ख़ूबसूरत शिक्षा दुनिया में फैले और मुसलमानों को भी अल्लाह तआला यह तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए कि उनकी अधिकतर बल्कि सारे ही ज़माना के इमाम को मानने वाले हूँ और ताकि फिर एक हो कर दुनिया में इस्लाम की वास्तविक और ख़ूबसूरत शिक्षा को फैलाया जा सके।

इस के इलावा नमाज़ों के बाद में कुछ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा है मौलाना ख़ुर्शीद अहमद अनवर साहिब का जो कादियान में तहरीक जदीद के वकीलुल माल थे। 19 मार्च को 73 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना

लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। एक लंबे अर्से से कैंसर की वजह से बीमार थे लेकिन बड़े सब्र और हिम्मत और हौसले के साथ आपने इस बीमारी का सामना क्या, इस बीमारी को बर्दाश्त किया। बहुत बीमारी और कमज़ोरी के बावजूद अपने फर्ज़ों की अदायगी में कभी कोताही नहीं की। नियमित दफ़्तर आते। बल्कि अपने वक़्फ़ को आख़िर दम तक उत्तम रूप से जिस हद तक कोशिश हो सकती थी निभाने की कोशिश की बल्कि मैं समझता हूँ जिस तरह हक़ अदा करना चाहिए था वह हक़ अदा किया। मरहूम अब्दुल अज़ीम साहिब दरवेश कादियान और रईसा बेगम साहिबा के बेटे थे और पिंडी भट्टियां से उनका सम्बन्ध था। उनके ख़ानदान में सबसे पहले उनके वालिद को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ नसीब हुई। बैअत के बाद आपके दादा ने उनका बहुत विरोध किया और मार पीट किया। फिर उन्होंने कादियान हिजरत की और यहीं स्थायी निवास किया। आपका बचपन कादियान के माहौल में बुज़ुर्ग सहाबा और दरवेशाने कादियान की सोहबत में गुज़रा। मैट्रिक तालीमुल इस्लाम स्कूल कादियान से किया। फिर मदर्रसा अहमदिया में दाख़िला लिया। 1967 ई में मदर्रसा अहमदिया कादियान से मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास किया और मदर्रसा अहमदिया कादियान में ही पहला तक़र्रुर टीचर के रूप में हुआ। इस के बाद 1982 ई में मैनेजर बदर निर्धारित हुए। कुछ समय सम्पादक बदर भी रहे। 1989 ई में नाज़िम इरशाद वक़्फ़ जदीद कादियान के रूप में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इसी तरह नायब नाज़िर इशाअत, सदर मजलिस ख़ुद्दाम अहमदिया भारत, नायब नाज़िर बैयतुल माल आमद के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। 2006 ई में उन्हें मैंने वकीलुल माल तहरीक जदीद मुक़र्रर किया था और इस ओहदे पर यह वफ़ात तक बड़े अहसन रंग में ख़िदमतें करते रहे। इसी तरह कई अहम मर्कज़ी कमेटियों के सदर और मैंबर भी रहे। इंतिज़ामी योग्यता उनमें बड़ी अच्छी थी और दिल की गहराई से और पूरे जोश से अपने फ़र्ज़ों को बड़ी अच्छी तरह अंजाम देते थे। चन्दा तहरीक जदीद में भी भारत बहुत पीछे था उस की पोज़ीशन को उन्होंने मज़बूत किया और बड़ी कोशिश की और अल्लाह के फ़ज़ल से क़ुर्बानीयों के लिहाज़ से बड़ा आगे ले आए। सिलसिला के पैसे का दर्द रखने वाले थे और बड़ी सावधानी से ख़र्च किया करते थे। इल्मी योग्यता में भी कमाल थी। आपके निबन्ध बड़े उत्तम होते थे। सालों तक अख़बार बदर कादियान की कामयाब सम्पादक के रूप में काम करने की तौफ़ीक़ पाई। अख़बार बदर में आप के सम्पादकीय धार्मिक ज्ञान से भरे हुए और उर्दू की फ़साहत तथा बलाग़त से भरपूर होते थे। हैदराबाद दक्कन में एक मुक़ाबला हुआ करता था। इदारा तामीर मिल्लत था जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत पर मुक़ाबला कराता था और वहां भी एक बार उन्होंने मज़मून लिखा था और पहला इनाम हासिल किया। यह चालीस साल पुरानी बात है। जवानी की बात है। मरहूम बहुत सी ख़ूबियों वाले थे। मिलनसारी, मेहमान-नवाज़ी, अनथक मेहनत उनके विशेष गुण थे। जलसा सालाना से पहले बड़ी लगन के साथ मेहमानों के आने की तैयारी करते थे। कम संसाधन होने के बावजूद बहुत उम्दगी से मेहमान-नवाज़ी का प्रबन्ध करते। बहुत अच्छी राय देने वाले थे। ग़रीबों के हमदर्द थे और अपने से ऊंचे अफसरों के बहुत अधिक आज्ञा पालन करने वाले। ख़िलाफ़त से गहरी लगाव था। आपका अरसा ख़िदमत लगभग 52 साल पर फैला हुआ है। आपकी चार बेटियां और एक बेटे हैं। और बेटे यहां हैं और एक बेटी उनकी अमरीका में है और एक कादियान में।

उनके दामाद ख़ालिद अहमद अलादीन साहिब ने लिखा कि बीमारी के दिनों में जब कभी में उनको आराम करने का कहता तो आप यही जवाब देते थे कि मेरी इच्छा है कि मैं आख़िर दम तक ख़िदमत करते हुए अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो जाऊं और इस अहद को उन्होंने निभाया। और उनके नायब सदर मजलिस तहरीक जदीद लिखते हैं उनका छात्र जीवन से ख़ाकसार के साथ ताल्लुक़ था और विभिन्न अवसरों पर उनके साथ काम करने का मौक़ा मिला। बहैसीयत नायब नाज़िर बैयतुल माल आमद निर्धारित हुए तो उस समय महोदय ने ख़ाकसार के साथ एक लंबे अर्से तक निहायत उम्दगी से काम किया। निहायत इताअत करने वाले, मेहनती, दयानतदार थे और माली मामलों पर बड़ी गहरी नज़र रखने वाले थे। जब उनको वकीलुल माल का चार्ज दिया गया है तो तहरीक जदीद का बजट कुछ लाख था जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से करोड़ों में चला गया। अल्लाह तआला उनके स्तर बुलंद फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ताहिर हुसैन मुंशी साहिब नायब अमीर फिजी का है जो 5 मार्च को 72 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। फिजी जमाअत के पुराने ख़ादिम थे। बड़ा लंबा समय उनको नायब अमीर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बहुत नेक, दुआ करने वाले, मुख़लिस और वफ़ादार बुज़ुर्ग इन्सान थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे, हिस्सा जायदाद अपनी ज़िन्दगी में अदा कर दिया था। पीछे रहने वालों में एक बेटा और एक बेटी यादगार छोड़ी हैं। ये दोनों बच्चे अहमदी नहीं हैं। आपने अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फिजी के तालीम विभाग में बहुत नाम कमाया। कॉलेज के प्रिंसिपल रहे। मिनिस्ट्री आफ़ एजूकेशन में सैकण्डरी प्रिंसिपल एजूकेशन आफीसर रहे। इस के बाद तरक़्क़ी हुई तो डिप्टी डायरेक्टर एजुकेशन हो गए और इसी पोस्ट पर 1999ई में उनकी रिटायरमैंट हुई। फिर उनको गर्वनमैंट ने दुबारा, re-employee कर लिया और पब्लिक एकाऊंट कमेटी का सदस्य बना दिया जो कुछ समय तक रहे फिर बीमारी के बाद इस से फ़ारिग़ हो गए। क़बूलीयत अहमदियत के बारे में हामिद हुसैन साहिब सदर जमाअत नसरोंगा वर्णन करते हैं कि मुंशी साहिब की पहली पोस्टिंग 1968 ई में नसरोंगा प्राइमरी स्कूल में हुई तो मैं उस वक़्त स्कूल का सैक्रेटरी था। अत: मेरी उनके साथ दोस्ती हो गई। हम अक्सर वक़्त इकट्ठा गुज़ारते थे। कहते हैं कि जमाअत के ख़िलाफ़ होने के बावजूद वह अहमदियत की बात सुनते थे और बहस भी करते थे। वह सुन्नियों में से थे। मुंशी साहिब की बैकग्रांऊड सुन्नी थी और जब वह अपने मौलवी को बहस के लिए बुलाते तो वह इन्कार कर देते थे जिस पर उनको बहुत अफ़सोस होता था। इस के बाद अल्लाह तआला ने उन पर बहुत फ़ज़ल किया और उनको इमाम वक़्त को मानने की तौफ़ीक़ भी दी। हामिद हुसैन साहिब ही वर्णन करते हैं कि उनको एहसान किस तरह उतारने की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं कि एक बार मुंशी साहिब कादियान से हो कर लौटे तो मुझे बताया कि मैंने बैयतुद्दुआ में आपके लिए बहुत दुआ की है कि अल्लाह तआला ने मुझे आपके माध्यम से इस मुक़ाम पर पहुंचाया अर्थात उन के माध्यम से अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली तो बैयतुद्दुआ में गए तो उनके लिए दुआ करते रहे कि इस शख़्स ने मुझ पर बहुत एहसान किया है। मुहसिन के लिए ऐसी दुआ का ख़्याल भी एक अहमदी को ही आ सकता है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्राबे रहेमहुल्लाह के ज़माना में आपने उनको नायब अमीर फिजी मुक़र्रर किया था।

नईम इक़बाल साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि बड़े वफ़ादार थे। ख़िलाफ़त से बहुत ज़्यादा वफ़ा का सम्बन्ध था। दूसरों को भी ख़िलाफ़त के सम्मान और इताअत की तहरीक करते थे। अपना उच्च नमूना भी हर समय दिखाते। कभी किसी बात पर मतभेद होता लेकिन जब पता लगता कि ख़लीफतुल मसीह की राय इस बारे में यह है तो शीघ्र अपनी राय छोड़ देते।

तीसरा जनाज़ा मूसा सिसको साहिब का है जो माली के निवासी हैं। 15 फरवरी को उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप फ़ौज में ब्रिगेड कमांडर थे। अहमदियत का परचिय आपको जमाअत की एक पत्रिका से हुआ। इस के बाद सिकासो (Sikasso) क्षेत्र के मुबल्लिग़ से निरन्तर सम्पर्क में रहे। नवंबर 2012 ई में अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ पाई। 2013 ई में उनको सिकासो (Sikasso) शहर में जमाअत के रेडियो स्टेशन के आरम्भ करने पर रेडियो का डायरेक्टर और इसी साल सदर जमाअत भी निर्धारित किया गया। रेडियो स्टेशन की स्थापना के बाद सिकासो क्षेत्र में ग़ैर मामूली विरोध का सामना था उस वक़्त उन्होंने बड़ी हिक्मत और सब्र तथा धैर्य से हालात का सामना किया और सारी समस्याओं का हल निकाला। सम्बन्धित अथार्टी से सम्पर्क किया। जमाअत का परिचय करवाया। इस के इलावा 2016 ई से आप नैशनल आमिला में बतौर सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। बैअत के बाद उन्होंने अपने आपको जमाअत के कामों के लिए वक़्फ़ कर दिया था। नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने के इलावा बाक़ायदगी से तहज्जुद अदा करते थे। बहुत मुख़लिस और वफ़ादार इन्सान थे। ख़िलाफ़त से ग़ैरमामूली मुहब्बत थी और ख़िलाफ़त की हर तहरीक पर लब्बैक कहने में पहल करते थे। पीछे रहने वालों में दो बीवियों के इलावा दस बेटियां और पाँच बेटे यादगार छोड़े हैं। अल्लाह तआला इन सब के स्तर बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद को भी नेकियों की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। मुंशी साहिब की जो औलाद अहमदी नहीं है अल्लाह तआला उनको भी तौफ़ीक़ दे कि वह भी ज़माना के इमाम को मानने वाले हूँ।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 04-10 जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कर रहे हैं। उनका कलिमा भी वही है , नमाज़ भी वही और क़ुरआन भी वही। सबसे ज़्यादा काबिल ग़ौर बात ख़त्मे नबुव्वत थी जिस पर मैं अब सोचने पर मजबूर हो गया हूँ कि ग़ौर तथा फिक्र करूँ कि क्या मैं अपने फ़िर्क़े को सच्चा कहूं या अहमदी फ़िर्क़े को। सब से बड़ा लाभ मुझे जलसा पर आने का यही हुआ है कि मैंने अहमदी लोगों में बैठ कर सब कुछ ख़ुद अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है और अब में अपने तौर पर अच्छी तरह देखूँगा कि इस्लाम असल में किया है और ख़त्म नबुव्वत क्या है? मुझे हुज़ूर की तक़रीर बहुत पसंद आई , विशेषकर आख़िरी दिन वाली। जलसा ख़त्म होने के अगले दिन मैंने उन से मुलाक़ात भी की। और मुझे उनसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। वह बहुत ही ख़ूबसूरत शख़्सियत के मालिक हैं। ये चार दिन मेरी ज़िन्दगी के बहुत ही अच्छे दिन थे। बाक़ी सारे मुसलमान सिर्फ बातें करते हैं और नफ़रतें फैलाते हैं लेकिन यहां मैंने सिर्फ मुहब्बत इज़्ज़त और सम्मान देखा है। मेरे साथ कुछ ग़ैर मुस्लिम दोस्त भी थे वे मुसलमानों के इस व्यवहार से , इस इज़्ज़त तथा सम्मान सै जो अहमिदया जमाअत ने उनको दिया बहुत ज़्यादा प्रभावित थे। प्रबन्धकीय टीम चाहे वे कोई भी थी, हर किसी ने बहुत प्यार, मुहब्बत , इज़्ज़त तथा सम्मान से बात की और गाइड किया और इतने बड़े जलसा को इतनी ख़ूबसूरती से मैनिज किया। मेहमानों के निवास से लेकर खाने पीने और ट्रांसपोर्ट के प्रबन्ध और इस के इलावा भी हर ज़रूरी प्रबन्ध देखकर में जमाअत अहमिदया से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करता हूँ।

यूनिवर्सिटी आफ़ एग्रीकल्चर लटूया के एक श्रीलंकन लैक्चरार Lakmal Kularatne साहिब भी जलसा में शरीक हुए। यह अपनी प्रतिक्रियाओं का प्रकट करते हुए कहते हैं कि सच्ची बात यह है कि जब मैंने इस में शामिल होना का फ़ैसला किया तो मुझे थोड़ा सा ख़ौफ़ था कि कहीं इस आयोजन पर कोई दहशतगर्दी का हमला ना हो जाएगी। मगर जब मैंने इस जलसा की सिक्योरिटी देखी तो मैंने महसूस किया कि कोई भी इस प्रोग्राम को या इस में शरीक किसी भी आदमी को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। मैं इस पूरे प्रोग्राम की सिक्योरिटी को बहुत appreciate करता हूँ। बावजूद उस के कि मेरे बहुत से श्रीलंकन मुसलमान दोस्त हैंमगर एक बुद्ध घराने में पैदा होने की वजह से मज़हब इस्लाम के बारे में मुझे कोई विशेष इल्म नहीं था। जलसा ने मुझे वास्तविक इस्लाम के बारे में शिक्षा दी है और दूसरे इस्लामी जमाअतों के बारे में बताया है। इसी तरह अहमिदया फ़िर्क़ा और दूसरे जमाअतों के मध्य फ़र्क़ स्पष्ट किया है। इस आयोजन से जो बेहतरीन चीज़ मैंने धारण की है वह यह है कि अहमिदया जमाअत एक मुहब्बत करने वाली जमाअत है में इस को बहुत ज़्यादा सराहना चाहता हूँ। मैं आपकी जमाअत की प्रबन्धकीय योग्यता को देखकर हैरान हुए बग़ैर नहीं रह सका और यह चीज़ स्पष्ट इशारा दे रही है कि आप लोग दुनिया की दरुस्त मार्ग में रहनुमाई कर सकते हैं।

लट्टूया से एक छात्रा ग्लोरिया साहिबा पहली बार किसी इस्लामी प्रोग्राम में शिरकत कर रही थीं। उन्होंने अपने प्रतिक्रियाएं का प्रकट करते हुए कहा :मुझे सब कुछ बहुत अच्छा लगा। खाना बहुत ज़्यादा लज़ीज़ था। लोग बहुत ख़ुश अख़लाक़ थे। डयूटी पर तैनात लजना हमेशा मुस्करा कर मिलती थीं। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि सब छोटे बड़े माहौल को साफ़ रखने में कोशिश कर रहे थे। मुझे ये सब बहुत अच्छा लगा। मैंने अपने आपको बहुत आरामदेह महसूस किया। मुझे वह नज़ारा अच्छी तरह याद है जब मेरी नज़र स्क्रीन पर पड़ी और मैंने देखा कि मर्दाना मार्की में सब लोगों ने एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखा हुआ था। इस कान्फ्रैंस में शामिल हो कर इस्लाम के बारे में मेरे विचार बिलकुल तबदील हो गए हैं। और यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि अभी भी कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं जो इस दुनिया की भलाई चाहते हैं।

मकेनीकल इंजीनीयरिंग के एक इंडियन छात्र विनय साहिब भी जलसा पर आए थे यह कहते हैं मेंने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी ऐसी मुहब्बत और ऐसे ख़ूबसूरत प्रबन्ध नहीं देखे। जो कुछ मैंने जलसा में देखा है उसने मुझे बहुत हैरान और प्रभावित किया है। अनुवाद का स्तर बहुत उच्च था और इसी तरह जो खाना उपलब्ध किया गया वह भी उच्च दर्जे का था। हर किसी ने हमारे साथ नेक सुलूक किया। यह प्रोग्राम मेरी ज़िन्दगी का नाक़ाबिल फ़रामोश हिस्सा है।

लट्टूया से एक और इंडियन छात्र ओंकार साहिब जलसा में शामिल हुए यह कहते हैं कि जलसा में शामिल होना यक़ीनन सौभाग्य की बात है। जलसा में शामिल होने का मौक़ा मिलने पर मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत ख़्याल करता हूँ । यह इज्तिमाई काम और प्रबन्ध का एक बेहतरीन नमूना था। इस को कामयाब बनाने के लिए विभिन्न टीमें बड़ी मेहनत से काम कर रही थीं। ट्रांसपोर्ट की टीम ने शानदार काम किया। इसी तरह रिहायश और खाने के प्रबन्ध भी बहुत उच्च थे। मुझे जलसा में शामिल होने का मौक़ा देने पर मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

लट्टूया से एक और इंडियन छात्र संकेत साहिब कहते हैं मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो कुछ मैंने जर्मनी में देखा वह बहुत हैरान करने वाला था। इस वक़्त तक मुझे अहमदी मुसलमानों और दूसरे मुसलमानों के मध्य फ़र्क़ मालूम नहीं था। ये लोग बहुत अच्छे थे और हमारे साथ उन्होंने बहुत शफ़क़त का सुलूक किया। रिहायश और ट्रांसपोर्ट का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। प्रोग्राम की अच्छी बात यह थी कि हर एक को इस हाल में एक उचित जगह दी गई। हम इंडिया से सम्बन्ध रखते थे उन्होंने हमारा इस तरह ख़्याल रखा कि जैसे हम भी इसी फ़ैमली का हिस्सा थे। मुझे सब के सब प्रोग्राम और प्रबन्ध बहुत पसंद आए। मैं ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि इस बड़े प्रोग्राम का एक छोटा सा participant हूँ। आपका बहुत शुक्रिया।

लट्टूया के वफ़द में तुर्की से सम्बन्ध रखने वाले एक मैडीकल के छात्र Alkan साहिब भी थे। यह अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं कि यह बहुत ही दिलचस्प प्रोग्राम था। इन तीन दिनों के दौरान मैंने इस्लाम और अहमिदया जमाअत के बारे में बहुत कुछ सीखा है। खासतौर पर दुनिया में अमन स्थापित करने की धारणा सारी तक़ारीर में बार-बार दुहराई गई। यह प्रोग्राम बहुत ही प्रभावित करने वाला था और प्रबन्ध बहुत ज़बरदस्त थे।

लट्टूया के वफ़द में शामिल एक लड़की Anastasia साहिबा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ग़ैर मुस्लिम मेहमानों से ख़िताब के बारे में वर्णन किया कि मुझे हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत पसंद आया और उन्होंने जो बातें की थीं वे बिलकुल दरुस्त थीं और मुझे बहुत अच्छी लगी हैं। इस ख़िताब के लिए यह मर्दाना जलसा गाह में आई थीं। इस के इलावा उनका सारी वक़्त लजना की मार्की में ही गुज़रा कहती हैं कि मर्दों के बीच बैठे मुझे शर्म आ रही थी और मुझे अजीब लग रहा था कि मेरे सिर पर दुपट्टा नहीं है।

लट्टूया से सिबीने साहिबा भी किसी मुस्लिम प्रोग्राम में पहली बार शरीक हो रही थीं यह कहती हैं यह प्रोग्राम बहुत अच्छा था। मैंने सारे सैशन से बहुत कुछ सीखा है। इस्लामी कल्चर और मज़हब बहुत ही विशेष है और लोगों के लिए खासतौर पर आया है। मुझे विशेष रूप से खाना बहुत अच्छा लगा। हमारी होटल में जो रिहायश थी वह भी बड़ी ख़ूबसूरत थी और मुझे बहुत पसंद आई है। सारे सैशन में काम करने वाले बहुत ही मददगार और ख़्याल रखने वाले थे। मेरा सबसे पसंदीदा दिन फ्रैंकफ़र्ट शहर में गुज़रा।

इस्टोनिया के वफ़द के प्रतिक्रियाएं

इस्टोनिया से एक मेहमान Rainer साहिब जलसा पर तशरीफ़ लाए थे। उन्होंने अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए कहा यह मेरा जलसा सालाना में शामिल होना का चौथा मौक़ा था। हर बार जलसा में शामिल हो कर विभिन्न प्रतिक्रियाएं होते हैं और नए अनुभव होते हैं और साथ ही कई नई बातें सीखने का मौक़ा मिलता है। पाकिस्तानी और अन्य अहमिदयों को जानना और मिलना हर बार दिलचस्पी का कारण बनता है। मैंने ऐसी कोई और क़ौम नहीं देखी जो इतनी बड़ी संख्या में इकट्ठी हो। अपने रिवायती लिबास पहने हुए हो, अच्छे अख़लाक़ दिखा रहे हूँ। आज तक मेरी आंखों ने जलसा सालाना में शामिल होने वालों से कोई बुरा व्यवहार होते नहीं देखा। एक और चीज़ जिसने मुझे बहुत प्रभावित क्या वह नमाज़ के पढ़ने का तरीक़ा है। सारे लोग एक दूसरे के साथ खड़े होते हैं और कोई भी वहां अलग हो कर अपनी नमाज़ नहीं पढ़ना चाहता। इत्तिहाद का क्या ही उच्च नमूना है। ये बातें ऐसी थीं जिन्होंने मुझ पर बहुत गहरा असर डाला और इसी वजह से मैंने जमाअत अहमिदया में शामिल होने का फ़ैसला किया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन्होंने जलसा सालाना जर्मनी के दौरान बैअत करने की भी सआदत हासिल की। यह एस्टोनियन क़ौम में से जमाअत अहमिदया में शामिल होने वाले पहले आदमी हैं।

Imam Jambul Abduladze साहिब वर्णन करते हैं कि मुझे बहुत ख़ुशी और इतमीनान है कि में जलसा सालाना पर आया हूँ । मैंने जलसा पर भाईचारा और वास्तविक इस्लामी शिक्षा देखी है।

Roland Shavadze साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं पहली बार जर्मनी आई हूँ यह जलसा मुझे बहुत ही अच्छा लगा। यहां के लोगों ने हमारी हर तरह की ख़िदमत की। हमारी बहुत ही अच्छी मेहमान-नवाज़ी की गई। यहां तक कि लोग मेरा नाम भी नहीं जानते थे मगर फिर भी बार-बार मदद करने के लिए हाज़िर होते थे।

एस्टोनियन वफ़द के एक मेहमान Giga Gegianidze वर्णन करते हैं कि यह

प्रोग्राम बहुत ही इल्मी और मआरिफ़ वाला था और लोग बहुत नेक और मेहमान नवाज़ थे।

एक और मेहमान Giorgi Kopaelishvili साहिब वर्णन करते हैं कि जो प्राजेक्टस यहां IAAEA ने किए हैं मुझे बहुत ही पसंद आए हैं। मैं ख़ुद भी इंजीनियर हूँ। मेरी इच्छा है कि में भी इस संस्था के साथ मिलकर ख़िदमते इन्सानियत करूँ।

इसी तरह एस्टोनियन वफ़द के एक मैंबर Giga Gegianidze वर्णन करते हैं कि जब मैंने IAAEAके प्राजेक्टस देखे हैं तो मुझे एहसास हुआ कि किसी को पानी देना हमारे लिए कितना आसान है इस लिए में ज़रूर उन गरीबों की मदद करने में शामिल हूँगा और इस संस्था में शामिल हूँगा।

सलोयेनिन वफ़द के प्रतिक्रियाएं

सीरिया से सम्बन्ध रखने वाले शीराज़ अहमद साहिब तीन साल से सलवीनया में मुक़ीम हैं। यह सलवीनया से जलसा में शिरकत करने के लिए आए थे। यह जलसा के दौरान बड़ी दिलचस्पी से प्रोग्रामों में शामिल होते रहे। जमाअत के बारे में बहुत से सवाल पूछते रहे। अरबी किताबें भी लीं और उनका अध्ययन भी किया और काफ़ी प्रभावित हुए लेकिन हुज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ने से हिचकिचाहट थी। बहरहाल उन्होंने जलसा के आख़िरी दिन हुज़ूर के पीछे ज़ुहर और अस्र की नमाज़ अदा की। जलसा के बाद उन्होंने अपने प्रतिक्रियाएं का प्रकट करते हुए कहा कि मेरे लिए जलसा के तीन दिनों में से आख़िरी दिन (जिस दिन हुज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ी थी) सबसे अच्छा और बेहतर दिन था। जब उनसे पूछा गया कि इस की क्या वजह है तो उन्होंने कहा आज जलसा का सबसे अच्छा दिन इस लिए था कि आज मैंने हुज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ी है। जलसा के बाद सोमवार को सलवेनियन वफ़द की हुज़ूर के साथ मुलाक़ात थी। प्रोग्राम के अनुसार मुलाक़ात के फौरन बाद सैर के लिए रवानगी थी लेकिन उन्होंने इच्छा का प्रकट किया कि हुज़ूर के पीछे एक और बार नमाज़ पढ़ना चाहते हैं। अत: उन्होंने नमाज़ पढ़ने के लिए दो घंटा इंतज़ार किया और नमाज़ के बाद सैर के लिए निकले।

स्लोवेनिया से एक कैथोलिक औरत बारबरा नोवाक साहिबा भी जलसा में शामिल हुईं। उनकी इन्सानी हुक़ूक़ की अपनी संस्था है। उनका एक पाकिस्तानी ग़ैर अहमदी दोस्त है और इस दोस्त ने उनको जलसा में शामिल होने से मना किया था और जमाअत के ख़िलाफ़ भी बातें कीं। लेकिन इसके बावजूद वह शामिल हुईं और कहती हैं जब भी मैं इस्लाम के बारे में बात करती हूँ तो हमेशा जमाअत अहमिदया का बताती हूँ क्योंकि मुझे सिर्फ अहमदियत में ज़िन्दा इस्लाम नज़र आता है।

Pfarrer Darius साहिब वर्णन करते हैं : ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत अच्छी थी और असर वाली थी। मुझे यहां आना बहुत अच्छा लगा। मैं और मेरी बीवी बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि हमें दावत दी गई। मुझे बहुत अच्छा लगा कि ख़लीफ़ा इन विषयों के बारे में बात करते हैं कि जो आज के दौर में प्रमुख हैं और उन्होंने इन मुश्किलों के हल वर्णन किए।

एक पादरी Dariuz साहिब अपने प्रतिक्रियाएं का प्रकट करते हुए कहते हैं :आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत प्रभावकारी थी। मुझे जलसा में शामिल हो कर बहुत अच्छा लगा। मैं और मेरी पत्नी आपके मशकूर हैं कि आपने हमें जलसा में शामिल होना की दावत दी। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि आपके ख़लीफ़ा वर्तमान समय के विषयों पर गुफ़्तगु फ़रमाते हैं और आपने वर्तमान के समस्या के हल वर्णन फ़रमाए है।

Ayvaz Mardanov वर्णन करते हैं :यह बहुत ही ख़ूबसूरत जलसा था। मैं सारी लोगों को सलाम कहना चाहता हूँ। ख़लीफ़ा के साथ मुलाक़ात मेरे लिए निहायत ही प्रमुख थी और मैं इस के महत्तव को ख़ूब समझता हूँ। जो अमन का पैग़ाम अपने ख़िताब में ख़लीफ़ा ने हमें दिया है यह पैग़ाम वक़्त की ज़रूरत है और इस पर अनुकरण करना बहुत ही ज़रूरी है।

Zaza Mikeladze साहिब मुलाक़ात के बाद अपने प्रतिक्रियाओं का प्रकट करते हुए कहते हैं :यह बहुत ही भावनात्मक मीटिंग थी क्योंकि ख़लीफ़ा ने हमारे साथ खुल कर बात की और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा स्पष्ट फ़रमाई। यह बातें मेरे लिए बहुत ही दिलचस्प थीं। मैं आप सब का शुक्रगुज़ार हूँ।

कज़ाकिस्तान के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

कज़ाकिस्तान से आने वाली एक मेहमान औरत रशीदा साहिबा वर्णन करती हैं : मैं जलसा से बहुत प्रभावित हूँ। यहां मेरी बड़े अच्छे लोगों से मुलाक़ात हुई। सब लोग सलाम करते और मुस्कराते चेहरों से मिलते थे। ऐसे लगता था कि जैसे सदियों से वाक़िफ़ थे हालाँकि हम पहली बार मिल रहे थे। सब लोग ऐसे नज़र आ रहे थे कि वह बहुत ख़ुश-क़िस्मत है। और अपनी ज़िन्दगी से बहुत ख़ुश है। यह कैफ़ीयत उसी वक़्त होती है जब इन्सान को पता हो कि वह जन्नत में दाख़िल होगा। जब जलसा ख़त्म हुआ तो मेरा दिल उदास हो गया।

हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के दौरान जो चीज़ मुझे सबसे ज़्यादा अच्छी लगी वह यह थी कि हुज़ूर लोगों के साथ बहुत ही प्यार और शफ़क़त से प्रस्तुत आते हैं और जो लोग मज़हब के बारे में जानना चाहते हैं उनको हुज़ूर विस्तार से जवाब देते हैं और लोगों के समस्या को बहुत ध्यान से सुनते है। इन बातों से साफ़ स्पष्ट होता है कि हुज़ूर लोगों के लिए अपनी ज़िन्दगी क़ुर्बान करने के लिए हर वक़त तैयार हैं और निसन्देह यह सिर्फ़ अल्लाह का चुना हुआ बंदा ही कर सकता है और इसी की ताकत में है।

कज़ाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाले एक अहमदी दोस्त फ़ानीर ग़लामोफ़ साहिब वर्णन करते हैं कि: ख़ाकसार अपनी पत्नी के साथ जलसा में शामिल हुआ है। हम दोनों हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात कर के बहुत ख़ुश हैं और अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत पाते हैं। जमाअत अहमिदया मुस्लिमा में शामिल होने से पहले अल्लाह तआला और इस के महबूब बंदे और रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान रखते थे। लेकिन दिल में एक बेचैनी की सी कैफ़ीयत थी और सोचता रहता था कि मेरी वफ़ात के बाद मेरी फ़ैमिली का क्या होगा। ताकि अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम में दाख़िल होने के बाद मेरी रूह को एक सुकून सा आ गया है और मैं इस यक़ीन पर क़ायम हो गया हूँ कि अब मेरे बच्चों के पास माँ बाप हैं और हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला से मुलाक़ात के बाद इस बात पर मेरा यक़ीन और अधिक मज़बूत हो गया है। मैं और मेरी फ़ैमिली अल्लाह तआला के बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि उसने हमें ज़माना के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई।

कज़ाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाले एक मेहमान दावरन यशानोफ़ साहिब वर्णन करते हैं : ख़ाकसार को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से दूसरी बार मुलाक़ात का मौक़ा मिला है। मैंने लंबा समय इस मुलाक़ात का इंतज़ार किया और पिछले साल के बाद ही इस हसीन लम्हा का इंतज़ार शुरू कर दिया। जलसा सालाना पर बहुत से मेहमान तशरीफ़ लाए थे। मुझे इस जलसा से बहुत ही रुहानी लाभ को प्राप्त करने का मौक़ा मिला। जब हुज़ूर अनवर ख़ाकसार के पास से गुज़रे और प्यार से मुस्कुराए तो मुझे इस लम्हा ने ख़ुशी से प्रसन्न कर दिया। मैंने ज़िंदगी-भर इतनी प्यारी मुस्कुराहट नहीं देखी। ख़ाकसार अपने आपको इस लिहाज़ से बहुत ही ख़ुश-क़िस्मत विचार करता है कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस बंदा को जलसा में शामिल होना का मौक़ा अता फ़रमाया है।

कज़ाकिस्तान से आने वाली एक औरत आदरणीया ज़ाहिदा साहिबा वर्णन करती हैं :हमारी फ़ैमिली 20 सालों से अहमदी है। अल्लाह तआला ने इस साल पहली बार हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया है। जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा तो मेरा दिल इतनी तेज़ी से हरकत करने लगा कि अभी कुछ हो जाएगा हालाँकि यह सिर्फ एक घबराहट थी। मैं बहुत ख़ुश और ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि हमारा ख़वाब पूरा हो गया है। मैं इतनी ख़ुश थी कि हुज़ूर अनवर से दुआ की दरख़ास्त करना भूल गई कि वह हमारे मुबल्लग़ीन के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ देता रहे और वह हमेशा हमारे पास रहें।

यह मुलाक़ात 12 बज कर 35 मिनट तक जारी रही। आख़र पर इन पांचों वफ़दों के सारे मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

मुल्क कोसोवो के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क कोसोवो से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कोसोवो से 42 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना में शामिल हुआ। वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि हमें जलसा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 25 April 2019 Issue No. 17

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

बहुत अच्छा लगा। हम जलसा के सारे प्रबन्ध से बड़े प्रभावित हुए हैं और हमारी मेहमान-नवाज़ी बहुत अच्छी थी। एक दोस्त ने निवेदन किया कि आप ने हमें जलसा पर आने की दावत दी। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ मुझे उम्मीद नहीं थी और मैंने सोचा भी नहीं था कि इतना ज़बरदस्त और अच्छा प्रबन्ध होगा।

एक औरत कहने लगीं कि मैं पहली बार आई हूँ । हमारा बहुत अच्छा ख़्याल रखा गया। सब प्रबन्ध ठीक था बहुत अच्छा था।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि वह तकलीफ़ की वजह से चल नहीं सकते थे। जब उन्होंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ का ख़त लिखा तो उस के बाद अल्लाह ने बहुत फ़ज़ल फ़रमाया और उन्होंने चलना शुरू कर दिया और उनकी तबीयत बेहतर हो गई और अब वह यहां जलसा पर आए है। इस पर हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ से फ़रमाया कि उनके हालात लिख कर भिजवाएं तो उनको होम्योपैथी दवाई दूँगा।

कोसोवो के वफ़द में एक मैथ के प्रोफ़ैसर अज़ीज़ नज़ीरी साहिब भी शामिल थे , जो इसी साल बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुए है। उन्होंने अपने प्रतिक्रियाएं का प्रकट करते हुए कहा: जलसा सालाना बहुत अच्छा था। प्रबन्ध भी काबिल-ए-तारीफ़ थे। इसी तरह हमारा बहुत अच्छा ख़्याल रखा गया।

कोसोवो से एक वकील Ardian Zeiqiraj साहिब अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए कहते हैं :इस जलसा के निज़ाम को देखकर ऐसा लगता है कि हर कोई ख़िलाफ़त की इताअत में डूबा हुआ अपना काम कर रहा है। यह सारी इताअत इस वजूद की मुहब्बत थी जो ख़लीफ़ा वक़्त की शक्ल में जमाअत अहमिदया को नसीब है। हुज़ूर से मुलाक़ात करने की सआदत नसीब हुई और जो नूर आपके चेहरा से झलक रहा था वही नूर है जिसकी वजह से जमाअत का हर आदमी एक लड़ी में पिरोया हुआ है। कोसोवो में भी इस तरह के इज्तिमा इत्यादि होते हैं लेकिन इस जलसा में शामिल हो कर एक अलग ही कैफ़ीयत इन्सान पर छा जाती है कि हर रंग तथा नस्ल के लोग इस जलसा में शामिल हैं और हर एक की ज़रूरत के अनुसार उनका ख़्याल रखा जा रहा है।

कोसोवो के वफ़द में शामिल एक बैंक के चीफ़ मुस्तफ़ा वॉल्ड वन साहिब पाँच साल बाद जलसा में शामिल हुए। यह अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं :हर क़ौम के लोग इस में शामिल हैं। जलसा की जगह अब छोटी हो गई है। और यह ख़ुशी की बात है कि अब जमाअत जर्मनी ने इतनी जल्दी तरक़्क़ी कर ली है। ख़ाकसार पाँच साल बाद शामिल हुआ है इसलिए आयोजन बैअत में जो रुहानी माहौल था ख़ाकसार को इस की ज़रूरत थी ताकि रूहानियत में वृद्धि कर सकूं।

कोसोवो के Besmir Yvejsia साहिब जो कि इस्लामी साईंस के माहिर हैं ,अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं : तक़रीरों के विषय वक़्त की ज़रूरत के अनुसार थे और सारे सवालों के जवाब उनमें मौजूद थे। तक़ारीर बहुत उम्दा तौर पर की गईं और हमारी ज़बान में इन तक़रीरों के अनुवाद का स्तर बहुत उच्च था। हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत अच्छा लगा। हुज़ूर अनवर की बातें और कथन आपके मुबारक वजूद को प्रकट करती हैं। आज के दौर में ऐसे वजूद मिलना नामुमकिन है जिनके कथन तथा कर्म में अन्तर ना हो।

कोसोवो के वफ़द में एक फिज़िक्स के प्रोफ़ेसर आरबर ज़कीराज साहिब भी शामिल थे। यह अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं: यह बात मेरे लिए अविश्वसनीय थी कि इतने लोगों का एक जगह जमा होना और उनकी ज़रूरतों का पूरा किया जाना मुमकिन है। जलसा में शामिल हो कर सारे प्रबन्ध को ध्यानपूर्वक देखा कि किस तरह हर चीज़ एक निज़ाम के साथ चल रही है। और ज़रूरतों का ख़्याल रखा जा रहा है। हर एक काम के लिए एक सेवक निर्धारित था। लंगर में जाने का संयोग हुआ वहां एक आदमी से मुलाक़ात हुई और वह पिछले 22 साल से प्याज़ छीलने का काम कर रहा है और पिछले 22 साल से इस के पास एक ही छुरी है जिस से वह प्याज़ों को काटता है। एक ही छुरी के इस्तेमाल करने के बारे में इस आदमी ने कहा कि इस छुरी को हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह ने पकड़ा था इसलिए में इस छुरी को इस्तेमाल करता हूँ ।

एक और साहिब आरबर ज़कीराज साहिब कहते हैं कि: जलसा का मुकम्मल प्रबन्ध सिर्फ और सिर्फ ख़िलाफ़त की मुहब्बत ही की वजह से है कि हर चीज़ में एक समरूपता नज़र आती है।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैंने इस जलसा के मौक़ा पर बैअत की तौफ़ीक़ हासिल की है। मेरी फ़ैमली की कुछ समस्या है। मेरे दो कज़न कोसोवो की दो बड़ी मस्जिदों के मुल्ला हैं और उनकी तरफ़ से बहुत विरोध का सामना है। अगर हुज़ूर अनवर मुझे कोई गुर बता सकें कि जिससे मुझे फ़ायदा हो और मैं उन्हें समझा सकों।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस में तो यही है कि इन के लिए दुआ करें और उनके साथ प्यार का सुलूक रखें। उनके साथ इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार सुलूक करें। अगर वे सख़्ती करते हैं तो आप उनका प्यार से जवाब दें ।

उस के इलावा तो और कोई गुर नहीं है। अगर कोई गुर होता तो हम उसे पाकिस्तान में इस्तेमाल कर लेते । दूसरा यह कि कल मैं ने कुछ घटनाएं सुनाईं और पहले भी कई बार सुना चुका हूँ कि अहमदियत क़बूल करने के बाद मुख़ालफ़तों का सामना करना पड़ता है। यह तो अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि यह देखने के लिए कि तुम ईमान में कितने मज़बूत हो तुम्हें आज़माया जाता है। यह तो क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने लिख दिया है कि आज़माय बिना तुम्हारे ईमान की मज़बूती का पता नहीं लग सकता। इसलिए परेशान होने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला से दुआ करते रहें , उनके साथ नेक सुलूक करते रहें तो एक वक़्त आएगा कि अच्छे हालात हो जाऐंगे। मैंने कल एक घटना सुनाई थी कि एक आदमी की बीवी पाँच साल तक उस का विरोध करती रही वह पाँच साल तक अपनी बीवी के लिए दुआ करता रहा तो पाँच साल बाद उस की दुआ क़बूल हुई। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में सालों अत्याचार होते रहे और लोग तंग करते रहे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दाआओं के बावजूद कुछ लोगों की इस्लाह नहीं हो सकी लेकिन जिनकी इस्लाह होनी थी उन पर दुआओं का शीघ्र असर भी होता रहा। जिनकी इस्लाह अल्लाह तआला करना चाहता था , उन के हक़ में आँ हज़रत की दुआएं शीघ्र क़बूल भी हो गईं और उनकी इस्लाह भी हो गई। अत: आप दुआ करते रहें, उनके साथ नेक सुलूक करते रहें और बाक़ी अल्लाह तआला पर छोड़ दें।

कोसोवो के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 12 बजकर 35 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर मेम्बरों ने तसवीरें बनवाने की सआदत पाई ।

मारीशस के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद जमाअत अहमिदया मारीशस के वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सआदत पाई। मारीशस से इस साल 30 लोगों पर आधारित वफ़द आया था। हुज़ूर अनवर के पूछने पर वफ़द के मेम्बरों ने बताया कि जलसा सालाना के प्रबन्ध बड़े मुनज़्ज़म तरीक़े पर थे और हम सब ने जलसा से भरपूर लाभ उठाया है। रिहायश के बारे में मेम्बरों ने बताया कि हमारी रिहायश जलसा गाह में ही थी। इस वजह से हमने पांचों नमाज़ें हुज़ूर अनवर के अनुकरण में अदा कीं और रुहानी तौर पर बहुत लाभ हासिल किया है। एक नौजवान ने निवेदन किया कि मैं शिक्षा हासिल कर रहा हूँ। सिवल इंजीनीयरिंग कर रहा हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। ख़ुदा तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

मारीशस के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 12 बज कर 35 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर सारी मेम्बरों ने बारी बारी फ़ैमली के अनुसार अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने की सआदत पाई।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad